दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 355 | ग्वालियर, 22 अक्टुबर रविवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

सिंधिया स्कूल में बोले पीएम मोदी-

पूरे विश्व में भारत की धाक जमी हुई है

पीएम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज यानी शनिवार को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में सिंधिया स्कूल के 125वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए. सिंधिया स्कूल के 125वें स्थापना दिवस के अवसर

पर आयोजित कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा कि सिंधिया स्कूल के 125 वर्ष होने पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई. आज आज़ाद हिंद सरकार का स्थापना दिवस भी है, मैं आप सभी को इसकी भी बधाई देता हूं. पीएम मोदी ने आगे कहा कि साल 2014 में जब देश ने मुझे प्रधानसेवक का दायित्व दिया तब मेरे पास 2 रास्ते थे- या तो सिर्फ तात्कालिक लाभ के लिए काम करें या दीर्घकालिक अप्रोच को अपनाएं। आज हमारी सरकार को 10 साल हो रहे हैं और इस दौरान देश ने दीर्घकालिक प्लानिंग के साथ जो फैसले किए वह अभूतपूर्व है. पीएम मोदी ने कहा कि आज भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है वह अभूतपूर्व है. पूरे विश्व में भारत की धाक जमी हुई है. 23 अगस्त को भारत चंद्रमा पर वहां पहुंचा, जहां अब तक कोई देश नहीं पहुंच पाया था. उन्होंने कहा कि पहले सैटेलाइट सिर्फ सरकार बनाती थी या विदेश से मंगवाती थी, हमने स्पेस सेक्टर को आप जैसे युवाओं के लिए खोल दिया है। हमने डिफेंस सेक्टर को आप जैसे युवाओं के लिए खोल दिया है। आपको मेक इन इंडिया के संकल्प को आगे बढ़ाना है। हमेशा आउट ऑफ द बॉक्स सोचिए। पीएम मोदी ने कहा कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है. आज भारत ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन रेट में नंबर 1 पर है. आज ही गगनयान के क्रू एस्केप सिस्टम का सफल परीक्षण किया गया। आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है.

2023 मध्य प्रदेश चुनाव के लिए भाजपा ने 92 उम्मीदवारों की सूची जारी की

नई दिल्ली। इस साल देश के पांच राज्यों (मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, मिजोरम और तेलंगाना) में होने जा रहे विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है. भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस समेत सभी दलों ने युद्ध स्तर पर चुनावी तैयारियां शुरू कर दी हैं. इस क्रम में भाजपा ने मध्य प्रदेश विधानसभा

चुनाव को ध्यान में रखते हुए 92 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी कर दी है. इससे पहले कमलनाथ के बयान पर पीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मैं विकास का नारियल लेकर चलता हूं. मैं योजनाओं का शिलान्यास करता हूं, नारियल फोड़ता हूं। मैं नारियल लेकर चलता हूं और वे (कमलनाथ) ताला लेकर चलते हैं. उनकी सरकार आने पर वे भाजपा की योजनाओं पर ताला लगा देते हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी उम्मीदवारों की यह 5वीं लिस्ट है. यहां गौर करने वाली बात यह है कि बीजेपी की इस लिस्ट में किसी सांसद या केंद्रीय मंत्री का नाम नहीं नहीं, जबकि दूसरी लिस्ट में बीजेपी ने मंत्री और सांसदों का नाम भी शामिल किया था. बीजेपी की पांचवीं लिस्ट के साथ ही केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को लेकर जारी अटलकों का दौर भी थम गया है. सिंधिया के ग्वालियर की किसी सीट से चुनावी मैदान में उतरने की चर्चा चल रही थी. चौंकाने वाली बात यह है कि ईदौर-एक विधासभी सीट से बीजेपी के प्रत्याशी बने कैलाश विजयवर्गीय के बेट आकाश को पार्टी ने टिकट नहीं दिया है. आपको बता दें कि बीजेपी इससे पहले उम्मीदवारों की चार लिस्ट जारी कर चुकी है. इन चारों लिस्ट में 136 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा कर दी गई थी. पहली और दूसरी लिस्ट में 39-39 उम्मीदवारों के नामों का ऐलान किया गया था. जबकि तीसरी सूची में केवल एक उम्मीदवार का नाम ही घोषित किया गया था. गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में 320 विधानसभा सीटों के लिए 17 नवंबर को मतदान किया जाएगा, जबकि वोटों की गिनती तीन दिसंबर को होगी. राज्य में 21 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक नामांकन दाखिल किए जाएंगे.

बीजेपी ने जारी की उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट

भाजपा ने राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए अपने 83 उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी कर दी है। पार्टी ने राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को उनके वर्तमान विधान सभा सीट झालरापाटन से ही चुनावी मैदान में उतारा है. आपको बता दें कि भाजपा की वर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया प्रदेश की झालरापाटन विधान सभा से वर्ष 2003, 2008, 2013 और 2018 में लगातार चार बार चुनाव जीत चुकी हैं.

कौन कहां से लड़ रहा चुनाव-भाजपा ने हाल ही में कांग्रेस छोड़कर पार्टी में शामिल होने वाली ज्योति मिर्धा को नागौर विधान सभा सीट से एवं इसी सप्ताह 17 अक्टूबर को भाजपा में शामिल होने वाले महाराणा प्रताप के वंशज विश्वराज सिंह मेवाड़ को नाथद्वारा से उम्मीदवार

घोषित किया है. अन्य उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा ने शनिवार को जारी अपनी दूसरी लिस्ट में सिद्धि कुमारी को बीकानेर पूर्व, राजेंद्र राठौड़ को तारानगर, संतोष अहलावत को सुरजगढ़, सतीश पुनिया को अम्बेर, कालीचरण सराफ को मालवीय नगर, हेम सिंह भड़ाना को थानागाजी, नरपत सिंह राजवी को चित्तौड़गढ़, दीप्ति महेश्वरी को राजसमंद और गोविंद रानीपुरिया को मनोहर थाना से उम्मीदवार घोषित किया है.

पहली लिस्ट 9 अक्टूबर को जारी की थी-इससे पहले, भाजपा ने राजस्थान के लिए अपनी पहली लिस्ट 9 अक्टूबर को जारी की थी, जिसमें पार्टी ने 41 उम्मीदवारों की घोषणा की थी. दूसरी लिस्ट के 83 उम्मीदवारों को मिलाकर पार्टी अब तक राजस्थान के कुल 124 उम्मीदवारों के नाम की घोषणा कर चुकी है.

कांग्रेस की पहली सूची जारी, गहलोत और पायलट कहां से लड़ेंगे चुनाव

नई दिल्ली।राजस्थान विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस ने पहली सूची जारी की है. पहली लिस्ट में 33 उम्मीदवारों के नाम का ऐलान किया गया है. इसमें ज्यादातर वीवीआईपी सीटें हैं. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपनी पुरानी सीट सरदारपुरा से चुनाव लड़ेंगे. वहीं, सचिन पायलट को टोंक से टिकट मिला है. प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा को लक्ष्मणगढ़ से प्रत्याशी बनाया गया है. इसके अलावा, सीपी जोशी को नाथद्वारा से टिकट मिला है. राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने 83 उम्मीदवारों की दूसरी सूची जारी की. इसके कुछ समय बाद कांग्रेस ने 33 प्रत्याशियों की पहली लिस्ट जारी की है. बीजेपी की दूसरी लिस्ट में वसुंधरा राजे के नाम का ऐलान किया गया है. वसुंधरा राजे झालरापाटन से ही चुनाव लड़ेंगी. वहीं नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ की सीट बदल दी गई है. उन्हें चूरू की बजाय तारानगर से मैदान में उतारा गया है. वे पहले भी तारानगर से चुनाव लड़ चुके हैं. वहीं, उदयपुर के पूर्व राजघराने के सदस्य विश्वराज सिंह मेवाड़

को नाथद्वारा से टिकट दिया गया है, वे कुछ दिन पहले ही भाजपा में शामिल हुए थे. कांग्रेस ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को जोधपुर की सरदारपुरा सीट से ही टिकट दिया है. वह वर्तमान में सरदापुरा से ही विधायक हैं. सचिन पायलट को भी पुरानी सीट टोंक से मैदान में उतारा गया है, जबकि गोविंद सिंह डोटासरा सीकर के लक्ष्मणगढ़ से चुनाव लड़ेंगे.

इन प्रत्याशियों पर पार्टी ने लगाया दांव-कांग्रेस ने नोहार से अमित चौहान, कोलायत से भंवर सिंह भाटी, सदलपुर से कृष्णा पूनिया, सुजानगढ़ से मनोज मेघवाल, मांडवा से रीता चौधरी, विराटनगर से इंद्राज सिंह गुर्जर, मालवीय नगर से अर्चना शर्मा, सांगनेर से पुष्पेंद्र भारद्वाज, मंडावर से ललित कुमार यादव, अलवर से टीकाराम जूली सिकरई से ममता भूपेश को टिकट दिया है.

इसके अलावा, सवाई माधोपुर से दानिश अबरार, लडनून से मुकेश भाकर, डीडवाना से चेतन सिंह चौधरी, जयाल से मंजू देवी, देगाना से विजयपाल मिर्धा, परबतसार से रामनिवास गावरिया, ओसियां से दिव्या मदेरणा, जोधपुर से मनीश पंवार, लूनी से महेंद्र विश्नोई, बायतू से हरीष चौधरी, वल्लभनगर से प्रीति गजेंद्र सिंह शेखावत, डूंगरपुर से गणेश गोघरा, बागीडोरा से महेंद्र जीत सिंह मालवीय, कुशलगढ़ से रामलीला खाडिया, प्रतागढ़ से रामलाल मीणा, भीम से सुदर्शन सिंह रावत, मंडलगढ़ से विवेक धाकड़ और हिंडोली से अशोक चांदना को टिकट मिला है.

भारत ने रचा इतिहास, गगनयान मिशन की पहली टेस्ट फ्लाइट ने पाई सफलता

नई दिल्ली।कई बाधाओं और चुनौतियों को पार करते हुए इसरो ने आखिरकार सफलता पा ली है. उसने गगनयान मिशन की पहली टेस्ट फ्लाइट को लॉन्च कर दिया है. इसरो ने शनिवार को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से गगनयान के क्रू मॉड्यूल को सफलता पूर्वक लॉन्च कर दिया है. इसे टेस्ट व्हीकल अबॉर्ट मिशन-और टेस्ट व्हीकल डेवलपमेंट फ्लाइंटकहा गया है. इसरो चीफ एस सोमनाथ ने बताया कि टीवी-डीवी 1 मिशन का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण हो गया है. इसके लिए उन्होंने इसरो की

पूरी टीम को बधाई दी है. बताया जा रहा है कि टेस्ट व्हीकल एस्ट्रोनॉट के लिए बनाए गए क्रू मॉड्यूल को अपने साथ ले गया. रॉकेट क्रू मॉड्यूल को लेकर 17 किलोमीटर ऊपर गया, इसके बाद बंगाल की खाड़ी में ये लैंड कर गया है. आपको बता दें कि शनिवार को टेस्ट मिशन सुबह 8 बजे लॉन्च किया गया था. मगर खराबी की वजह से 8.45 बजे इसे दोबारा से शेड्यूल किया गया. इसके बाद ?दोबारा लॉन्च से पहले इंजन ठीक तरह से काम नहीं कर पाया. इस कारण से लॉन्चिंग स्थगित हो गई.

भाजपा ने झालरापाटन से वसुंधरा को उतारा, किन दिग्गजों के लिस्ट में हैं नाम

नई दिल्ली भारतीय जनता पार्टी ने राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए अपने 22 उम्मीदवारों की दूसरी लिस्ट को सामने रखा है. इस सूची में पूर्व सीएम वसुंधरा राजे और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया का नाम शामिल है. वसुंधरा राजे सिंधिया को झालरापाटन से टिकट मिला है. कांग्रेस से भाजपा में शामिल ज्योति मिर्धा नागौर से उम्मीदवार है. भाजपा की इस लिस्ट में 83 नामों का ऐलान किया गया है. इनमें से 10 महिलाएं हैं. जयपुर की विद्याधर नगर सीट

से विधायक नरपत सिंह राजवी को अब चित्तौड़गढ़ से टिकट दिया गया है. पहली सूची में भाजपा ने उनका टिकट काट दिया था. उनकी जगह राजसमंद सांसद दीया कुमारी को विद्याधर नगर से टिकट मिला. भाजपा ने कई पूर्व मंत्रियों को टिकट दिया. इस लिस्ट में प्रताप सिंह सिंघवी, श्रीचंद कृपलानी, नरपत सिंह राजवी, ओटाराम देवासी, पुष्पेंद्र सिंह राणावत, अनिता भदेल, कैचरण सराफ, राजेंद्र राठौड़, वासुदेव देवनानी समेत कई पूर्व मंत्री भी हैं.

वसुंधरा कैंप के कई नेताओं को टिकट-इस लिस्ट में वसुंधरा कैंप के एक दर्जन करीबी नेताओं के नाम हैं. इसमें प्रताप सिंह सिंघवी,अशोक डोगरा, नरपत सिंह राजवी, श्रीचंद कृपलानी, कालीचरण सराफ, कैलाश वर्मा, सिद्धि कुमारी, हेम सिंह भड़ाना, अनिता भदेल, कन्हैया लाल के नाम हैं. वसुंधरा की एक करीबी सिद्धि कुमारी को भी टिकट दिया गया है. ये बीकानेर के पूर्व शाही परिवार से संबंध रखती हैं.

कांग्रेस को इन दलों से मिलेगा ऑक्सीजन, क्या फिर दोहरा पाएगी 2018 का प्रदर्शन

भोपाल ।इस साल के आखिर में देश के पांच राज्य मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं. इसे लेकर राजनीतिक पार्टियां भी एक्टिव हो गई हैं और उनके दिग्गज नेता चुनावी प्रचार में जुट गए हैं. आज हम मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव की बात करेंगे. कांग्रेस एमपी चुनाव में जीत हासिल करने के लिए अन्य दलों से भी गठबंधन कर रही है. आइये जानते हैं कांग्रेस ने क्या समीकरण सेट किया है.मध्य प्रदेश में इस वक्त भारतीय जनता पार्टी की सरकार है. भाजपा ने एक बार फिर सत्ता में वापसी के लिए पूरी ताकत झोंक दी है. बीजेपी ने एमपी चुनाव में कई केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों पर भी दांव लगाया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद भी मोर्चा संभाल रखा है. भाजपा की रणनीति को फेल करने और सत्ता से हटाने के लिए कांग्रेस और सपा के एक साथ आने की चर्चा चल रही है. साथ ही जयस भी कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी. मध्य प्रदेश की सियासत से जुड़ी बड़ी खबर आ रही है कि कांग्रेस-सपा एमपी चुनाव में एक साथ आ सकते हैं. उत्तर प्रदेश से सटे मध्य प्रदेश की यादव बहुल्य सीटों पर सपा की नजर है. समाजवादी पार्टीने पांच सीटों पर दावा ठोका है. अब सपा द्वारा मांगी गई सीटों पर सर्वे शुरू हो गया है.

दिल्ली के तिलक नगर से बरामद हुई स्विस महिला की लाश! पुलिस ने दर्दनाक वारदात में किया बड़ा खुलासा...

दिल्ली में एक स्विस महिला की दर्दनाक मौत से हड़कंप मच गया है. तिलक नगर स्थित एक निगम संचालित स्कूल के पास महिला की लावारिस लाश पड़ी मिली है. मौके से गुजर रहे एक राहगीर ने इसकी सूचना पुलिक को दी थी, जिसपर पुलिस टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर लाश को बरामद कर लिया है. आशंका है कि महिला की हत्या कर लाश को यहां फेंक दिया गया था. मृत महिला की उम्र करीब 30 साल बताई जा रही है. पुलिस ने इस मामले में एक शख्स को गिरफ्तार किया है, जिसके घर से पौने दो करोड़ रुपये जब्त किए गए हैं. साथ ही इस मामले में पुलिस ने कई बड़े खुलासे किए हैं...) से गुजर रहा एक शख्स दिल्ली पुलिस को फोन लगाता है. वो शख्स पुलिस को बताता है कि स्कूल के पास एक महिला की लावारिस लाश पड़ी मिली है. सूचना पर फौरन पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंचती हैं और लाश को बरामद करती है. अतिरिक्त जांच के लिए इस लावारिस लाश को फौरन दीन दयाल उपाध्याय (डीडीयू) अस्पताल ले जाया जाता है, जहां डॉक्टर महिला के दो से तीन दिन पहले मृत्यु होने का खुलासा करते हैं. पुलिस की शुरुआती पड़ताल में पता चलता है कि महिला का कत्ल कर उसे यहां फेंक दिया गया था. महिला की शरीर पर चोटों के तमाम निशान भी मौजूद थे.

जला हुआ था स्विस महिला का चेहरा.-इससे साफ जाहिर था कि, मौत देने से पहले महिला की गंभीर प्रताड़ना शिकार बनाया गया था, जिसके बाद पुलिस ने मामले में आगे की तफ्तीश शुरू की. पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले, साथ ही फॉरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर वारदात से जुड़े तमाम सबूत भी इकट्ठा किए. हालांकि घटनास्थल पर मौजूद स्थानीय लोगों का कहना था कि, मृत महिला का चेहरा जला हुआ था, जबकि पुलिस इस बात से साफ इनकार कर रही है. अब पुलिस ने मामले में आईपीसी की धारा 302/201 दर्ज कर, कत्ल की गुत्थी को सुलझाने में जुट गई.

इस मामले में पहली और इकलौती गिरफ्तारी गुरप्रीत सिंह की करी गई. मालूम चला कि आरोपी गुरप्रीत की मुलाकात स्विस महिला से स्विट्जरलैंड में हुई थी, वो अक्सर उससे मिलने स्विट्जरलैंड भी जाया करता था.दोनों एक-दूसरे के बहुत करीब थी, मगर इसी बीच मालूम चला कि महिला के किसी अन्य पुरुष से साथ भी संबंध हैं. लिहाजा वो भौखला गया, उसने महिला का खेल खत्म करने के लिए उसे घुमाने के बहाने हिंदुस्तान बुलाया. जहां वो उसे एक कमरे में ले गया, यहां उसने स्विस महिला के हाथ-पैर बांध दिए और जादू दिखाने के बहाने उसकी बेरहमी से हत्या कर दी.

बड़े खुलासे होने की उम्मीद-हालांकि आरोपी गुरप्रीत सिंह का वहशीपन बस यहीं खत्म नहीं हुआ, बल्कि उसने उसी स्विस महिला की आईडी से पुरानी कार खरीदी, जिसमें उसने उसकी लाश को ठूसा और कहीं पार्क कर दी, जब कुछ रोज बाद लाश से बदबू आने लगी, तो उस लाश को ले जाकर दिल्ली के तिलक नगर स्थित उसी निगम संचालित स्कूल के पास फेंक दिया.फिलहाल पुलिस कत्ल के इस मामले में अतिरिक्त जांच में जुटी है. गिरफ्तार आरोपी गुरप्रीत सिंह और घटनास्थल पर मौजूद लोगों से पूछताछ की जा रही है. पुलिस को उम्मीद है कि मामले में जल्द ही बड़ा खुलासा किया जाएगा.

जिला आयुष अधिकारी राजेंद्र अहिरवार द्वारा प्रार्थी को फर्जी प्रकरण में फसाये जाने का षड्यंत्र किया जा रहा

जिलाधिकारी आयुष द्वारा प्रार्थी को कई षडयंत्रों में फसाया

प्रार्थी पवन प्रताप सिंह औषधि सेवक पद पर जिला आयुष अधिकारी टीकमगढ़ द्वारा नियुक्त की गई थी 13 महीने नौकरी करने के बाद उन्हें सेवा से निकाल दिया था जिला आयुष अधिकारी के छोटे भाई कैलाश अहिरवार की फर्जी प्रमाण पत्र पर नियुक्ति कर दी गई थी यह की भाई पवन प्रताप सिंह हाईकोर्ट जबलपुर में प्रकरण चल रहा है जब सूचना अधिकार के अधिनियम के तहत जिला आयुष अधिकारी से उनके भाई कैलाश अहिरवार के संपूर्ण शिक्षक दस्तावेज की नकल मांगी थी जो प्रार्थी को नहीं दी गई जिसकी प्रार्थी द्वारा अपील की गई है आपको बता दें इसी बात को लेकर जिला आयुष अधिकारी राजेंद्र अहिरवार प्रार्थी से रंजिश रखने लगे हैं तथा यह कोई भी फर्जी प्रकरण दर्ज करवा सकते हैं क्यों वह प्रार्थी पर दबाव बनाना चाहते हैं की उनके भाई फर्जी दस्तावेज की नकल ना लें यदि जिला आयुष अधिकारी राजन अहिरवार द्वारा प्रार्थी के विरुद्ध कोई शिकायत आवेदन दिया जाता है तो उसकी जांच कार्यवाही की जाए थाना पृथ्वीपुर से प्रार्थी के पास कई प्रकार के फोन आते हैं कि आपके द्वारा इस तरीके का आवेदन आया है आप थाना आ जाओ अगर कोई मेरे खिलाफ प्रकरण दर्ज होता है तो उसकी कार्यवाही जांच पड़ताल करके की जाए

शिवपुरी पुलिस की अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही, पुलिस थाना करैरा द्वारा 90 लीटर हाथ भट्टी की बनी कच्ची शराब कीमती 36 हजार रूपये सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

हरिओम चतुर्वेदी। पत्रकार

पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश सिंह जी के द्वारा जिले मे अवैध मादक पदार्थ जुआ सट्टा, अवैध हथियार, अवैध खनन परिवहन, अवैध शराव की धरपकड अभियान के तहत जीरो टालरेन्स अपनाने के निर्देश दिये गये हैं । उक्त निर्देशों के पालन मे अति0 पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले जी एवं एस.डी.ओ.पी. करैरा श्री शिवनारायण मुकाती के मार्गदर्शन में दिनांक 20.10.2023 की रात को थाना करैरा पुलिस को मुखविर द्वारा सूचना मिली कि एक व्यक्ति ग्राम दाबरभाट के बाहर पुलिया के पास अवैध शराब से भरी हुई प्लास्टिक की दो कैनों को कहीं ले जाने के लिये वाहन का इन्तजार कर रहा है । मुखबिर की सूचना की तस्दीक हेतु मुखबिर द्वारा बताये स्थान पर पहुचा तो एक व्यक्ति पुलिस को देखकर भागने लगा जिसे फोर्स द्वारा घेरावन्दी कर पकडा उसका नाम पता पूछा तो उसने अपना

नाम अहवरन उर्फ ऐवरन पुत्र भैयालाल परिहार उम्र 40 साल निवासी ग्राम दाबरभाट थाना करैरा जिला शिवपुरी का होना बताया उसके कब्जे से हाथ भट्टी की बनी कच्ची शराब से भरी प्लास्टिक की दो कैन जिसमें करीब 45- 45 लीटर कुल 90 लीटर कीमती 36 हजार रूपये को जप्त किया गया तथा आरोपी को गिरफ्तार किया गया । आरोपी के विरुद्ध धारा 34(2) आबकारी एक्ट के तहत अप0 क्र0 740/23 पंजीबद्ध किया गया। आरोपी से अन्य आरोपियों के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

बरामद माल- 01. दो प्लास्टिक की कैनो में 45-45 लीटर कुल 90 लीटर हाथ भट्टी की कच्ची शराब कीमती 36 हजार रुपये ।

इनकी रही भूमिका- थाना प्रभारी निरी0 सुरेश शर्मा, उनि केपी शर्मा, आर0 राघेन्द्र यादव, आर0 सोनू श्रीवास्तव, आर0 देवेश तोमर, सैनिक सुघर सिंह ।

चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को जमा करनी होगी निक्षेप राशि

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- विधानसभा का चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को नाम निर्देशन पत्र के साथ दस हजार रूपये की निक्षेप या जमानत राशि जमा करनी होगी लेकिन यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति वर्ग का है, भले ही वो अनारक्षित निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा है तो उसे इसका आधा यानि पांच हजार रूपये की राशि जमानत के रूप में नाम-निर्देशन पत्र के साथ जमा करनी होगी। भारत निवार्चन आयोग के निर्देशानुसार विधानसभा का चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार को जमानत राशि रिटर्निंग अधिकारी के पास अथवा भारतीय रिजर्व बैंक या सरकारी खजाने में चालान भरकर जमा करना होगी। उसे चालान या रसीद की मूल प्रति नामांकन पत्र के साथ रिटर्निंग अधिकारी को रिटर्निंग अधिकारी को नाम-निर्देशन पत्र के साथ प्रस्तुत करना होगी। आयोग के मुताबिक कोई भी उम्मीदवार एक निवार्चन क्षेत्र से नामांकन पत्र के चार सेट रिटर्निंग अधिकारी को प्रस्तुत कर सकता है लेकिन उसे जमानत या निक्षेप राशि जमा करने की मूल रसीद नामांकन पत्र के पहले सेट के साथ ही रिटर्निंग अधिकारी को प्रस्तुत करनी होगी। यदि कोई उम्मीदवार एक साथ दो निवार्चन क्षेत्रों से भी चुनाव लड़ता है तो ऐसी स्थिति में उसे दोनों निर्वाचन क्षेत्रों के लिए अलग-अलग निक्षेप राशि रिटर्निंग अधिकारी को प्रस्तुत करनी होगी।

शिवपुरी पुलिस की अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही, पुलिस थाना अमोला द्वारा 70 लीटर हाथ भट्टी की कच्ची जहरीली शराब मय मोटर सायकल सहित जप्त कर एक आरोपी को किया गिरफ्तार

हरिओम चतुर्वेदी। पत्रकार

अवैध शराब पर कार्यवाही करनें हेतु श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह भदौरिया (भा0पु0सें(0) के निर्देशन में एवं अति0पुलिस अधीक्षक श्री संजय मुले (रा0पु0से0),एसडीओपी करैरा श्री शिवनारायण मुकाती के नेतृत्व में थाना प्रभारी अमोला अमित चतुर्वेदी को निर्देशित किया गया था । थाना प्रभारी द्वारा लगातार थाना क्षेत्र मे मुखविर मामूर कर आज दिनांक 21.10.23 को विश्वसनीय मुखविर की सूचना प्राप्त हुयी सूचना की तस्दीक हेतु मय हमराही फोर्स व बाहन के छान रोड पुराना अमोला क्रेशर पहडिया के पास जंगल मे मुखविर द्वारा बताये स्थान पहुँचे एक लाल रंग की पुत्र नौनेराजा एच.एफ.डीलक्स मोटर सायकल क्रमांक स्क्क33स्4048 का चालक सुरेन्द्र सिंह चौहान उम्र 40 साल निवासी शाजापुर थाना भौंती जिला शिवपुरी को हाथ भट्टी की कच्ची जहरीली कुल कीमती 64000 रुपये शराब 70 लीटर कीमती 14000 रुपये मोटर सायकल कीमत 50000 रुपये की जप्त कर अपराध क्रमांक 250 / 23 धारा 49 (क), 34 (2) आवकारी एक्ट का पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया ।

उक्त सम्पूर्ण कार्यवाही मे थाना प्रभारी अमोला अमित चतुर्वेदी, प्र. आर. 376 हरदयाल जोशी, आर. 519 रामलक्ष्मन मधुरिया, आर. 393 पवन राठौर, नीतेन्द्र सिंह, आर0 607 शिवम यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

पुलिस थाना गोवर्धन द्वारा कार्यवाही करते हुये 62 लीटर हाथ भट्टी की कच्ची शरातब के साथ एक आरोपी को किया गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश सिंह जी के द्वारा जिले मे अवैध मादक पदार्थ जुआ सट्टा, अवैध हथियार, अवैध खनन परिवहन, अवैध शराव की धरपकड अभियान के तहत जीरो टालरेन्स अपनाने के निर्देश दिये गये हैं । उक्त निर्देशों के पालन मे अति0 पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले जी एवं एस.डी.ओ.पी. पोहरी श्री सुजीत सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में पुलिस थाना गोवर्धन द्वारा अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही करते हुये एक आरोपी को गिरफ्तार किया है । आज दिनांक 21.10.2023 को पुलिस थाना गोवर्धन पर मुखबिर द्वारा सूचना मिली की गिरवानी गजीगढ़ रोड पर से एक व्यक्ति अवैध शराव ले जा रहा है । मुखबिर सूचना से तुरंत कार्यवाही करते हुये थाना प्रभारी गोवर्धन द्वारा पुलिस टीम बनाकर मुखबिर के बताये स्थान पर रवाना किया । मौके पर पुलिस टीम पहुंची तो एक व्यक्ति पुलिस को आता देख भागने लगा जिसे पुलिस टीम द्वारा घेराबंदी कर पकड़ा जिसका नाम पता पूछां तो उसने अपना नाम प्रताप रावत पुत्र हरिसिंह रावत उम्र 38 साल निवासी गिरवानी थाना गोवर्धन का होना बताया जिसके कब्जे से हाथ भट्टी की बनी कच्ची शराब 62 लीटर कीमती 6200 रूपये की जप्त की गयी । पुलिस थाना गोवर्धन पर आरोपी के खिलाफ अपराध क्रमांक 100/23 धारा 34(2) आवकारी एक्ट का कायम कर विवेचना मे लिया गया । उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी एस. एस. सिकरवार , एएसआई सतेंद्र तिवारी,एचसी 733 प्रदीप गुर्जर ,एचसी 729 वीरेंद्र सिंह ,आर.752 सेलेंद्र धाकड़,आर.852 नीरज तिवारी की सराहनीय भूमिका रही ।

पुलिस थाना गोवर्धन द्वारा 315 बोर के देशी कट्टा एवं 02 जिंदा राउण्ड के साथ एक आरोपी को किया गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश सिंह जी के द्वारा जिले मे अवैध मादक पदार्थ जुआ सट्टा, अवैध हथियार, अवैध खनन परिवहन, अवैध शराव की धरपकड अभियान के तहत जीरो टालरेन्स अपनाने के निर्देश दिये गये हैं । उक्त निर्देशों के पालन मे अति0 पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले जी एवं एस.डी.ओ.पी. पोहरी श्री सुजीत सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में पुलिस थाना गोवर्धन द्वारा अवैध हथियारों के खिलाफ कार्यवाही करते हुये एक आरोपी को गिरफ्तार किया है । दिनांक 20/10/2023 को थाना गोवर्धन द्वारा पर मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुयी की एक व्यक्ति अवैध हथियार लेक कोई घटना को कारित करने की नियत से घूम रहा है । सूचना पर तुरंत कार्यवाही करते हुये थाना प्रभारी गोवर्धन द्वारा पुलिस टीम बनाकर मुखबिर के बताये स्थान पर रबाना किया । पुलिस द्वारा गिरवानी गजीगढ़ रोड पर पहुंचकर देखा तो एक व्यक्ति पुलिस को आता देख भागने लगा जिसे पुलिस टीम की मदद से पकड़ा और उसका नाम पता पूछा तो अपना नाम राजविहारी पुत्र सूरज रावत उम्र 30 साल निवासी गिरवानी थाना गोवर्धन के कब्जे से एक 315 बोर का कट्टा मय 02 जिंदा राऊंड कीमती 4000 रूपये का जप्त किया।अपराध क्रमांक 99/23 धारा 25/27 आर्म्स एक्ट का कायम किया उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी एस. एस. सिकरवार , एएसआई सतेंद्र तिवारी,एचसी 733 प्रदीप गुर्जर ,एचसी 729 वीरेंद्र सिंह ,आर.752 सेलेंद्र धाकड़,आर.961 देवीलाल जाट की सराहनीय भूमिका रही ।

थाना गोपालपुर द्वारा नावालिक पीडिता के दुष्कर्म के मामले मे आऱोपी को किया गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पीडिता द्वारा थाना गोपालपुर पर रिपोर्ट किया कि पीड़ीता ग्राम डेंडरी मे भैसों के लिये भूसा लेने गई थी, उसी समय गाँव का आऱोपी पाटुर मे घुस आया और अंदर से कुंदी लगा दी और जबरजस्ती कर आरोपी द्वारा पीड़ीता के साथ दुष्कर्म किया और पटुर मे ही बंद कर दिया । आरोपी द्वारा घटना की जानकारी किसी को देने पर जान से मारने की धमकी दी और आऱोपी घटना स्थल से फरार हो गया । पीड़ीता बेहोसी की हालत मे इलाज के दौरान जिला अस्पताल शिवपुरी मे रिपोर्ट की थी । रिपोर्ट पर से थाना गोपालपुर पर तुरंत कार्यवाही करते हुये अपराध क्रमांक 25/23 धारा-376(3)342,506द्धक्ष्ट 3/4क्क्ष्स्स्ह ,ष्ट्ञ. का पंजीवध्द कर विवेचना मे लिया गया । आऱोपी की गिरफ्तारी हेतु वरिष्ठ अधिकारीगणों को सूचना दी गई दौराने विवेचना पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री संजीव मुले के निर्देशन एवं श्रीमान स्ठ्ठ.ह्र.क्क पोहरी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी थाना गोपालपुर उनि आर,एस धाकड को टीम गठित कर फरार आऱोपी की गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया। थाना प्रभारी थाना गोपालपुर द्वारा टीम गठित आऱोपी के गिरफ्तारी हेतु ग्राम डेंडरी, वैराढ, शिवपुरी, सुभाषपुरा, सतनवाडा, एवं आसपास के क्षेत्र मे तलाश किया गया परन्तु आरोपी नहीं मिला दिनांक 20.10.2023 को घटना दिनांक से फरार आऱोपी को शिवपुरी मुखिवर सूचना पर गिरफ्तार किया जाकर आज माननीय न्यायालय मे पेश किया गया है । संपूर्ण कार्यवाही में थाना गोपालपुर से थाना प्रभारी उनि.आर.एस,धाकड एवं उनकी टीम प्र,आर,धर्मेन्द्र जाट,आर,प्रशांत गुर्जर,आर,रवि नरवरिया,आर,छक्कूराम कुशवाह, की सराहनीय भूमिका रही ।

आंतरिक भाव से ईश्वर को याद करेंगे तो ईश्वर सदैव रहते है साथ परिवार के संकट भी टल जाते हैं : बीके रेखा बहन

पोरसा,,,,, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गांधीनगर पोरसा के मुख्य सेवा केंद्र के माध्यम से आज रजोधा ग्राम में परमपिता परमात्मा का संदेश दिया बीके रेखा बहन ने बताया की परमपिता परमात्मा हम सबके पिता है जिनको हम अनेक नाम रूप में याद करते हैं गॉडफादर ईश्वर अल्लाह भगवान जिस प्रकार से भगवान एक होते हुए भी उनके अनेक नाम है उस प्रकार से अनेक रूप में ईश्वर को किया जाता है हम उनको अनेक नाम से पुकारते हैं लेकिन सब की याद एक भगवान की तरफ ही जाती है बता दे साथ यह भी कहा जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अभी नवरात्रि का पावन पर्व चल रहा है अर्थात देवियों के दिन चल रहे हैं तो हर घर में हमारी मां के रूप में बहन के रूप में देवी विराजमान है बस जरूरत है हमें अपने संस्कारों को परिवर्तन करने की इस नवरात्रि से हम सबको अपने अंदर परमात्मा की याद का परमात्म देवी शक्तियों का घृत अपनी आत्मा में डालते रहना है अर्थात उनकी याद रूपी घृत माना निरंतर हमें अपने अंदर देवी शक्ति को याद रखना है क्योंकि गायन भी है शिव शक्ति अर्थात हम सब शिव की शक्तियां हैं क्योंकि भगवान शिव के अंदर बहुत शक्तियां हैं

शिवपुरी पुलिस द्वारा शहीदों को श्रद्धांजलि देकर मनाया गया पुलिस स्मृति दिवस

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-पुलिस स्मृति दिवस प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर को मनाया जाता है। पुलिस स्मृति दिवस के महत्व के बारे में सीआरपीएफ की बहादुरी का एक हिस्सा है। गौरतलव है कि आज से 63 वर्ष पहले 21 अक्टूबर 1959 में लद्दाख में तीसरी बटालियन की एक कम्पनी को भारत तिब्बत सीमा की सुरक्षा के लिये लद्दाख में ''हाट स्प्रिंग'' में तैनात किया गया था। कम्पनी को टुकऱियों में बांटकर चैकसी करने को कहा गया जब बल के 21 जवानों का गस्ती दल हाट स्प्रिंग में गस्त कर रहा था तभी चीनी फौज के एक बहुत बडे दस्ते ने इस गस्ती टुकडी पर घात लगाकर आक्रमण कर दिया, तब बल के मात्र 21 जवानों ने आक्रमणकारियों का डटकर मुकाबला किया । मातृभूमि की रक्षा के लिये लडते हुये 10 सूरवीर जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया । हमारे बल के लिये व हम सब के लिये यह गौरव की बात है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के इन बहादुर जवानों के बलिदान को देश के सभी केन्द्रीय पुलिस संगठनों व सभी राज्यों की सिविल पुलिस द्वारा पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है ।सम्पूर्ण भारत वर्ष में जिला पुलिस

मुख्यालय एवं केन्द्रीय पुलिस बल के वाहिनी मुख्यालय के देश की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था एवं अपराधो पर नियंत्रण के दौरान कर्तव्य की बलिवेदी पर कई पुलिस के सैनिक शहीद हुये हैं। जिनमें कुछ सैनिक मध्यप्रदेश से हैं, इन अधिकारियों एवं कर्मचारियों की शहादत को नमन हेतु प्रत्येक वर्ष की तरह आज भी पुलिस लाइन शिवपुरी में शहीद जवानों की याद में स्मृति दिवस मनाया । देश की एकता, अखंडता, आन,बान और शान को बनाये रखने के लिए इन कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा अपने प्राणों की आहुति देकर उत्कृष्ट कर्तव्य परायणता का प्रदर्शन किया गया है । इस अवसर पर कलेक्टर शिवपुरी श्री रविन्द्र चौधरी, पुलिस अधीक्षक श्री रघुवंश सिंह भदौरिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संजीव मुले, एसडीओपी शिवपुरी श्री संजय चतुर्वेदी, एसडीओपी करैरा श्री शिवनारायण मुकाती, एसडीओपी पिछोर श्री प्रशांत कुमार शर्मा, एसडीओपी कोलारस श्री विजय यादव, रक्षित निरीक्षक श्री अनिल कवरेती, थाना प्रभारी कोतवाली, देहात, फिजीकल, यातायत पुलिस अधीक्षक कार्यालय एवं पुलिस लाइन शिवपुरी के आधिकारी कर्मचारी, उपस्थित रहे ।

नगर परिषद कर्मचारियों ने आई लव मुंगावली जेल तालाब पर केण्डल जलाकर जागरूकता नारों के साथ मतदाताओं को मतदान के लिए किया प्रेरित

मुंगावली -दैनिक पुष्पांजली टुडे संवाददाता जितेंद्र राय

-स्वीप प्लान के अंतर्गत नगर परिषद सीएमओ विनोद उन्नितान के निर्देशानुसार स्वीप प्रभारी नवेद ?ा?ी द्वारा नगर में प्रतिदिन मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत अलग अलग मतदाता जागरूकता गतिविधियाँ की जा रही हैं जिससे कि आगामी 17 नवम्बर को अधिक से अधिक मतदान हो सके कोई भी व्यक्ति मतदान से न छूट पाए इसके लिए निरंतर स्वीप प्लान के माध्यम से मतदाओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है जिससे कि मतदान का प्रतिशत ब?ाया जा सके। शुक्रवार को भी नगर परिषद कर्मचारियों ने आई लव मुंगावली जेल तालाब पर केण्डल जलाकर जागरूकता नारों के साथ मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया साथ ही कैण्डल रैली भी निकाली गई। स्वीप कार्यक्रम में नगर परिषद से उपयंत्री कुलदीप सिंह नरवरिया, देवेन्द्र राजपूत,जितेंद्र अहिरवार,राशिद खान,जितेंद्र तामरे आदि कर्मचारी उपस्थित रहे।

भाजपा ने भिंड से नरेंद्र सिंह मेहंगाव से राकेश शुक्ला को बनाया अपना उमीदवार

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । लंबे इंतजार के बाद भारतीय जनता पार्टी ने पांचवीं सूची जारी की जिसमें भिंड के वर्तमान विधायक संजीव सिंह कुशवाह संजू का टिकट काटकर उनके जगह पर पूर्व विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह और मध्यप्रदेश में राज्यमंत्री ओपीएस भदौरिया का टिकट काटकर उनकी जगह पर मेहंगाव विधानसभा क्षेत्र से पूर्व विधायक राकेश शुक्ला को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। इस प्रकार जिले में कांग्रेस और भाजपा ने पांचों विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित कर दिये हैं।

श्री आईजी शिक्षण संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय कुशालपूरा से श्री आई माता जी दर्शन लाभ के दोहरान श्री आई माता जी की आरती की अदभुत प्रस्तुति

पुष्पाजंली टुडे

बिलाड़ा । रायपुर क्षेत्र में स्थित कुशालपूरा गांव से नवरात्रि के शुभ अवसर पर श्री आईजी शिक्षण संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय परिवार की ओर से कक्षा 3 से 12 तक की बालिकाओं के लिए आज शनिवार को श्री आई माता जी के मुख्य धाम बिलाड़ा पहुंचा जिसमें विद्यालय संस्था प्रधान मदनलाल सीरवी एवं ओमप्रकाश दिनेश वैष्णव अनिल सीरवी सचिव प्रेमा सीरवी सहित विश्व प्रसिद्ध श्री आईजी की अखंड केशर ज्योति के दर्शन कर दीवान साहब ने आशिर्वाद लिया। बिलाड़ा से समाज सेवी सीरवी गोविंद सिंह पंवार ने शैक्षिक दल की अगुवाई करते हुए मंदिर परिसर में लगी प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देकर मंदिर परिसर का अवलोकन करवायासीरवी समाज धर्म गुरु माननीय दीवान साहब ने

आशीर्वचन रूप जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए हमेशा किसी कार्य को करने के लिए आप स्वयं की खुशी से शुरूवात करे तो सब कार्य स्वैच्छिक ही सफल हो जाएंगे। आप हमेशा हर कार्य को निरंतर प्रयास करके सफलता की ओर बढ़ सकते हैं। विधार्थियो को शिक्षा का मूलमंत्र बताए हुए कहा की आपकी किताब की आपका सबसे सर्व श्रेष्ठ मित्र बताते हुए आधुनिक युग में खाली समय में मोबाइल रूपी शत्रु को साइड करके अपना ध्यान किताब पढ़ने में लगाए जिससे आगामी जीवन में आने वाली कठिनाइयों की राह आसान रहेंगी !

मालनपुर सूर्या रोशनी में सजा मां के दरबार आज हुए भजन कीर्तन

पुष्पांजली टुडे
संवाददाता मालनपुर पहलवान सिंह राजावत

उघोग क्षेत्र मालनपुर सूर्या रोशनी लिमिटेड कंपनी में नवरात्रि के पावन पर मां का दरबार सजा नवरात्रि में मां की पूजा अर्चना करने से का बड़ा महत्व है सूर्या रोशनी प्रांगण में मां का दरबार आकर्षित रूप से सजाया गया यह नौ दिवस का देवी दुर्गा मां को समर्पित है इन दोनों मां अपने नौ स्वरूप में प्रतिदिन रहती है इसी को लेकर कंपनी मैं माता के भक्तों ने कराया भजन संध्या माता रानी के दरबार में जिसमें कंपनी प्रबंधन ने बढ़-चढ़कर रिश्ता लिया भजनों पर नाचे प्रबंधन एवं ठेके दार जवाहर सिंह यादव ने मां के दरबार में चार चांद लगा दिए फैक्ट्री प्रबंधन माता के भजनों पर

लगाए ठुमके बता दें कि हर वर्ष इसी तरह भजन संध्या का कार्यक्रम रखा जाता है ग्वालियर से आए कलाकारों ने भजन सुनने के लिए नवरात्रों में भक्तों का ताता लगा रहा मालनपुर नगर में माता का दरबार 12 स्थान पर सजाया गया है इस शुभ अवसर पर उपस्थित रहे सूर्या रोशनी जनरल मैनेजर मुकुल चतुर्वेदी सूर्य हाईमस्ट पाइप डिवीजन हेड मानसिंह शेखावत, मुकुल राय अमरदीपसिंह तोमर, ललित जी, पुरुषोत्तमलाल पुरू, विनोद सिंह राजपूत, संजय सिंह कुशवाह, छोटे सिंह भदौरिया, ठेकेदार एवं समस्त सिक्योरिटी टीम और समस्त सूर्या परिवार माता के भजनों में लीन रहा

जी.आर.व्हाय. इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी, बोरावां में,शिक्षा और उद्योग जगत के बीच नई संभावनाओं और विश्लेषण,के लिए दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित,250 विद्यार्थी हुए शामिल

खरगोन जिले से मुन्ना खान
पुष्पांजलि टुडे

खरगोन>.खरगोन जिले से मुन्ना खान
पुष्पांजलि टुडे , जी.आर.व्हाय. इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी, बोरावां में 20 एवं 21 अक्टूबर को दो दिवसीय वर्कशाप का आयोजन किया गया । जिसका विषय उद्योग और शिक्षा जगत के बीच नई संभावनाओं और विश्लेषण था। कार्यक्रम का उदघाटन महाविद्यालय के डॉ. सुजीत पिल्लई प्राचार्य, जी.आर.व्हाय. फार्मोसी, डॉ अतुल उपाध्याय, प्राचार्य, जेआईटी एवं डॉ. सुनील सुगंधी डीन जेआईटी ने संयुक्त रूप से किया।कार्यशाला में मुख्य वक्ता मुकेश तिवारी सीनियर मेनेजर, पार फार्मुलेशन मुंबई, संतोष गोस्वामी मेनेजर ऐल्केम लेबोरेट्रीस मुंबई, ब्रिजेश शुक्ला सीनियर मेनेजर सेल्स जी.एस.के फार्मा, मुंबई एवं श्री अर्नव मिश्रा सी.ई.ओ, एम.आई. फांउडेशन, इंदौर ने अपने वक्तव्य दिये।मुकेश तिवारी ने अपने वक्तव्य में एफ.एण्ड.डी विभाग की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं समझाया की फार्मा कंपनी में रिसर्च के क्षेत्र में कैसे जाया जा सकता है। श्री अर्नव मिश्रा ने लाभ कमाने के साथ साथ उद्यियम को चलाने के लिये नए तरीके से उपलब्ध संसाधनों को एकत्रित करने का मार्ग बताया । संतोष गोस्वामी ने सी.क्यू.ए विषय पर विस्तृत जानकारी दी तथा विभिन्न विभागों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराया। ब्रिजेश शुक्ला ने फार्मा मार्केटिंग विषय पर जानकारी दी तथा विभिन्न मार्केटिंग रणनितियों से अवगत कराया। महाविद्यालय के लगभग 250 विद्यार्थियों ने दो दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागिता की ।विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए संकल्पित - अरूण यादवदो दिवसीय वर्कशॉप के सफल आयोजन पर पूर्व केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री अरूण यादव ने सभी विद्यार्थियों को प्रेषित अपने संदेश में आश्वस्त किया कि हम अपने विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा एवं प्रशिक्षण उपलब्ध करने हेतु संकल्पित है । यह दो दिवसीय कार्यशाला सभी विद्यार्थियों के कॅरियर निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी । संस्था प्राचार्य डॉ. सुजीत पिल्लई प्राचार्य जी.आर.व्हाय. इंस्टीट्युट ऑफ फार्मेसी, बोरावां द्वारा समस्त विशेषज्ञों, स्टाफ एवं विद्यार्थियों का आभार प्रकट किया।

चोरी के प्रकरण में वर्ष 2021 से फरार चल रहे 3000 रुपये के इनामी, स्थाई वारंटी को ऊमरी पुलिस ने किया गिरफ्तार

महेंद्र शर्मा उपसंपादक पुष्पांजली टुडे

थाना– ऊमरी। दिनांक 21 अक्टूबर को आगामी विधानसभा चुनाव वर्ष 2023 को निर्विघ्न, शांतिपूर्ण रूप से संपन्न कराये जाने हेतु श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय डॉ. असित यादव के निर्देशन में तथा श्रीमान अति. पुलिस अधीक्षक महोदय श्री संजीव पाठक, श्रीमान उप पुलिस अधीक्षक महोदय मुख्यालय भिण्ड श्री संजय कोच्छा के मार्गदर्शन में चलाये जा रहे फरारी एवं स्थाई वार्रटियों की धरपकड अभियान के तहत ऊमरी पुलिस ने चोरी के प्रकरण में वर्ष 2021 से फरार चल रहे 3000 रुपये के इनामी स्थाई वारंटी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है।माननीय न्यायालय सय्यद दानिश अली न्यायाधिकारी ग्राम न्यायालय जनपद भिण्ड के प्र.क्र. 273/2014, धारा 379 भादवि में फरार चल रहे स्थाई वारंटी की गिरफ्तारी हेतु श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा 3000 रुपये का इनाम घोषित किया गया था। दिनांक 20/10/2023 को मुखबिर की सूचना पर स्थाई वारंटी को एम. जे. एस. कॉलेज के पास भिण्ड से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार शुदा स्थाई वारंटी को माननीय न्यायालय पेश किया गया।

सराहनीय भूमिका–उक्त उल्लेखनीय कार्य में थाना प्रभारी ऊमरी निरीक्षक रविन्द्र शर्मा, प्र.आर. आशीष तिवारी, मनोज सिंह राजावत आरक्षक धर्मपाल सिंह परिहार की महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

आज दिनांक 21.10.23 को नगर परिषद मौ द्वारा विधानसभा निर्वाचन 2023 स्वीप अंतर्गत मतदाता जागरूक रैली निकाली गई

पुष्पांजलि टुडे रिपोर्टर मौ डॉ.बेताल सिंह गौड़

आज मौ नगर में नागरिकों को मतदाता के लिए जागरूक किया गया। जिसमे उपस्थित सीएमओ दिनेश श्रीवास्तव, ए आर आई सुरेश जाटव, तेज सिंह गौड़, रामनिवास गजेन्द्र यादव, राजेश कुशवाह, आमिर खान सहित सफाई मित्रों द्वारा मतदाता जागरूकता कार्यक्रम को सफल बनाया

यंववतंपुर डिपो के सिनियर कोचिंग अधिकारी धर्मेंद्र सीरवी को पत्रिका देकर किया आमंत्रित

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू। सीरवी समाज इलेक्ट्रॉनिक के पदाधिकारी सूचना मंत्री देवाराम सोलंकी, रमेश बर्फा ने मुख्य अतिथि के रूप में आंमत्रित करने के लिए यशवंतपुर सीनियर रेल्वे डिपो अधिकारी धर्मेन्द्र सीरवी को पत्रिका देकर निमंत्रण दिया। देवाराम सोलंकी ने बताया कि सीरवी समाज इलेक्ट्रॉनिक सीटी नवनिर्मित भवन का उद्घाटन समारोह तीन दिवसीय कार्यक्रम 26 अक्टूबर से धर्मगुरू दीवान माधवसिंह व अन्य संत महात्माओं के सानिध्य में होगा

भिण्ड एसपी असित यादव ने पुलिस स्मृति दिवस पर शहीद पुलिसकर्मियों को किया याद, कर्तव्य निष्ठा का दिलाया संकल्प .

केशब पंडित जी ब्यूरो चम्बल ??

भिण्ड... में पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर शनिवार को शहीद पुलिस कर्मियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई. इस अवसर पर शहीदों याद किया गया. एसपी डा असित यादव ने पुलिस कर्मियों को स्मृति दिवस के बारे में जानकारी देते हुए कर्तव्य निष्ठा का संकल्प दिलाया. पुलिस स्मृति दिवस पर एसपी ने पुलिस लाइन में शहीद पुलिस के जवानों को नमन कर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दीजवानों के साथ-साथ मध्य प्रदेश पुलिस और अन्य जिलो के एसएएफ बीएसएफ पुलिस जवानों द्वारा किये गये उनके त्याग, बलिदान को याद कर उनके सम्मान में रिजर्व पुलिस लाइन में उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने पुष्प अर्पित कर उनको याद किया. एमपी असित यादव ने पुलिस बलों के शहीद जवानों के त्याग, बलिदान पर

प्रकाश डालते हुए पुलिस के जवानों को संयमित होकर पूर्ण अनुशासन के साथ सतर्कता के साथ अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाहन करने की सलाह दी.

पुलिस स्मृति दिवस का बताया महत्व-पुलिस स्मृति दिवस केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उन 10 वीर जवानों की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने 21 अक्टूबर सन् 1959 को भारत के उत्तरी सीमा लद्दाख के हॉटस्पिंग में, समुद्र तल से लगभग 10 हजार फिट की ऊंचाई पर हिमाच्छादित जनहीन क्षेत्र में चीनी सैनिकों के कपटपूर्ण किये गये हमले को निष्प्रभावी कर अपनें प्राणों की आहुति दी थी. 21 अक्टूबर को हर साल यूपी पुलिस बल के सदस्य विगत एक वर्ष में कर्तव्य पथ पर शहीद हुए अपने साथियों को श्रद्धांजलि देने हेतु स्मृति दिवस का आयोजन करते हैं.

पात्र वंचित कब्जाधारियों को देंगे वन अधिकार पत्र

सचिन यादव ने पट्टेधारी आदिवासी किसानों को फसल ऋण, सिंचाई, खादऔर बीज की सुविधा उपलब्ध कराने का

खरगोन जिले से मुन्ना खान
पुष्पांजलि टुडे

खरगोन, कांग्रेस प्रत्याशी सचिन यादव ने कहा कि मप्र में कांग्रेस की सरकार बनते ही पात्र वंचित कब्जाधारियों को भी वन अधिकार पत्र देंगे । उन्होंने कहा कि वन अधिकार अधिनियम का उचित क्रियान्वयन कर पिछले 16 साल से वंचित आदिवासी भाईयों को जल, जंगल और जमीन पर अधिकार का वास्तविक लाभ देंगे । वन अधिकार के समस्त दावों जिनमें अधिकार पत्र नहीं दिये गये है, उनकी फिर से जॉच करायेंगे और पात्र वंचित कब्जाधारियों को भी वन भूमि के पट्टे प्रदान करेंगे । श्री यादव ने आज शनिवार को ग्राम सुर्वा, किरगांव, दोमवाडा और हीरापुर गांव के सभी फालियाओं में चुनावी जनसंपर्क करते हुए आदिवासी भाईयों से रूबरू होते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी ने अपने वचन पत्र में सुनिश्चित किया है कि आपकी पट्टे की जमीन को उन्नत बनायेंगे । फसल ऋण, सिंचाई, खाद और बीज की सुविधा भी वनभूमि पर काबिज पट्टेधारी आदिवासी किसानों को देंगे ।

वन अपराध के दर्ज प्रकरण वापस लेगे – कसरावद से विधानसभा चुनाव लड रहे कांग्रेस प्रत्याषी सचिन यादव ने ग्राम सुर्वा में कहा कि भाजपा शासनकाल में आदिवासी भाईयों के खिलाफ वन विभाग में सैकडों की संख्या में वन अपराध दर्ज किये गये है । कांग्रेस पार्टी की मप्र में सरकार बनते ही प्राथमिकता से इनकी समीक्षा कर वन अपराध के प्रकरण वापस लेकर आदिवासी भाईयों के साथ न्याय करेंगे । आपके खिलाफ हो रहे अन्याय को अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा । सभी आदिवासी भाईयों और बहनों को सुरक्षा भी प्रदान की जाएगी । संविधान और आरक्षण को बचाने की लडाई लडने वालों को देगे संविधान

रक्षक सेनानी का दर्जा मप्र के पूर्व कृषि मंत्री रहे और कसरावद से लगातार तीसरी बार विधानसभा का चुनाव लड रहे सचिन यादव ने कहा कि भाजपा के राज में संविधान और आरक्षण को बचाने के लिये आपने और युवा आदिवासी साथियों ने एक लम्बी लडाई लडी है । इस दौरान आपके खिलाफ पुलिस प्रकरण भी कायम किये गये है । संविधान और आरक्षण बचाओ आन्दोलन करने वाले अनुसूचित जाति-जनजाति और पिछडा वर्ग के लोगों पर अपराधिक प्रकरण चल रहे है उनको वापस लेगे । इन आन्दोलनकारियों को कांग्रेस की सरकार बनने पर संविधान रक्षक सेनानी का दर्जा दिया जाएगा ।

आदिवासी बालक बालिकाओं को नि:शुल्क शिक्षित कर दिलायेगे रोजगार –अपने जनसंपर्क भ्रमण के दौरान श्री यादव ने आदिवासी परिवारों से चर्चा करते हुए कहा कि वे अपने बालक बालिकाओं को शिक्षा दिलाये । कांग्रेस ने सुनिश्चित किया है कि आदिवासी छात्र छात्राओं को कक्षा पहली से लेकर उच्च शिक्षा नि:शुल्क प्रदान की जाए । इसके लिये हम छात्रवृत्ति का अधिकार अधिनियम भी बनायेगे । आदिवासी छात्र छात्राओं के लिये सर्व सुविधायुक्त और मूलभूत सुविधाओं वाले छात्रावास, खेल परिसर बनायेगे । हर ब्लाक और जिले में आपके बच्चों के लिये आवासीय सुविधा उपलब्ध करायेगे । शिक्षा प्राप्त करने के बाद कांग्रेस ने आपके बच्चों को भी रोजगार की ग्यारंटी देना सुनिश्चित किया है । व्यवसाय करने पर उन्हें सारी सुविधाएं उपलब्ध कराकर एक योग्य और सफल उद्यमी भी बनायेगे । आदिवासियों का विकास कांग्रेस की पहली प्राथमिकता है और इसको पूरा करने का मैं भी वचन देता हू ।

जनसंपर्क अधिकारी
माननीय श्री सचिन यादव जी

संपादकीय

मान्यता से इनकार

हालांकि, सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की संविधान पीठ ने समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने से इनकार कर दिया है, लेकिन कोर्ट के फैसले ने इस विमर्श को आगे बढ़ाया है। कोर्ट की मंशा है कि समाज में समलैंगिक समाज का उत्पीड़न रोकना सरकारों का दायित्व है। साथ ही केंद्र व राज्य सरकारें उनके जीवन के लिये जरूरी सुविधाएं देने में सकारात्मक भूमिका निभाएं। पीठ का नेतृत्व कर रहे मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने स्पष्ट किया कि अदालत यह कानून नहीं बना सकती। वह इसकी व्याख्या कर सकती है और उसे लागू कर सकती है। उनका कहना था कि स्पेशल मैरिज एक्ट में संशोधन का दायित्व संसद पर था। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह फैसला एलजीबीटीक्यूआईए समुदाय के सदस्यों को रिश्तों में प्रवेश करने के अधिकार से नहीं रोकेगा। साथ ही अदालत ने केंद्र, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को यह सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया कि इस समुदाय के साथ किसी भी तरह का भेदभाव न हो। कोर्ट के इस नजरिये के चलते ही केंद्र सरकार ने एक समिति बनाने का फैसला किया है जो समलैंगिक संघों में शामिल व्यक्तियों के अधिकारों पर विचार–विनिमय करेगी। दरअसल, केंद्र सरकार इस विवाह को कानूनी मान्यता देने के पक्ष में नहीं थी। इतना ही नहीं इस विवादास्पद मामले में कई पहलुओं को लेकर न्यायाधीशों में भी असहमति थी। वहीं पीठ ने स्पष्ट किया कि विवाह किसी व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं है। वहीं दूसरी ओर समलैंगिक जोड़ों के बच्चे गोद लेने के अधिकार पर भी कोई सहमति नहीं थी। समलैंगिक संगठन हालांकि, इस फैसले से निराश तो हैं लेकिन वे इस बात को अपनी उपलब्धि मानते हैं कि अदालत ने समलैंगिक जोड़ों को सामाजिक भेदभाव, उत्पीड़न और उपहास से बचाने के निर्देश केंद्र व राज्यों को दिये। साथ ही कोर्ट ने इस वर्ग के अधिकारों के प्रति जनता को जागरूक करने पर भी बल दिया। बहरहाल, समलैंगिक विवाह को मान्यता के सवाल को शीर्ष अदालत ने संसद के जिम्मे छोड़ दिया है। लेकिन इस मुद्दे पर समाज में राय बनाने की जरूरत है कि समलैंगिकता एक बायोलॉजिकल स्थिति है। दरअसल, यह विषय भारतीय समाज में खासा विवादास्पद रहा है। एक वर्ग भारतीय संस्कृति का हवाला देकर इसे एक प्रकार की मानसिक विकृति बताता रहा है। केंद्र सरकार की ओर से भी इसे कुछ शहरी लोगों का शगल बताया गया और कहा गया कि ग्रामीण भारत में ऐसी स्थिति नजर नहीं आती। जिसके जवाब में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश का कहना था कि समलैंगिकता शहरों तक सीमित नहीं है, गांव में खेत पर काम करने वाली महिला भी ऐसा दावा कर सकती है। बहरहाल, इस दौरान विशेष विवाह अधिनियम की संवैधानिकता को लेकर भी सवाल उठे। वहीं दूसरी ओर कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि समलैंगिकों को दिये जाने वाले अधिकारों और लाभों की पहचान करने के लिये कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता वाला पैनल बने। जिसके बाद इनके संयुक्त बैंक खाते खोलने, बीमा पॉलिसियों में भागीदारी, पेंशन व पीएफ के लाभों पर विचार हो सके। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2018 में समलैंगिक रिश्तों को प्रतिबंधित करने वाली धाराएं सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी थीं। जिसके पांच वर्ष बाद समलैंगिकों के विवाह को मान्यता देने का मामला शीर्ष अदालत के पास आया। बहरहाल, इस मामले में शीर्ष अदालत ने संवैधानिक लिहाज से अपनी सीमा का सम्मान किया। यह यक्ष प्रश्न है कि क्या संसद खुद पहल करके इस मामले में कोई कानून बनाती है? इस मामले में जो कानूनी बाधाएं हैं क्या उन्हें दूर किया जाएगा? हालांकि, केंद्र सरकार का इस मामले में साफ कहना रहा है कि वह समलैंगिक शादियों को कानूनी मान्यता के पक्ष में नहीं है क्योंकि इससे कई तरह की कानूनी जटिलताएं पैदा होंगी। वह इसे शहरी अभिजात्य वर्ग की अवधारणा मानती रही है। उल्लेखनीय है कि दुनिया में इस विवाह को मान्यता देने की शुरुआत वर्ष 1989 में हुई और आज दुनिया के 34 देशों में इसे मान्यता है।

'गाजा' की चुनौती और 'बाइडेन'

इजरायल ने उत्तरी गाजा के 11 लाख नागरिकों का बिजली, पानी, रसद व ईंधन बन्द कर दिया है जिसकी वजह से इस क्षेत्र में मानवीय संकट बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही इजरायल विश्व संगठनों द्वारा गाजा के लोगों को भेजी जा रही मदद सामग्री को गाजा में प्रवेश भी नहीं दे रहा है जिसकी वजह से मानव अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्थाओं की चिन्ता बढ़ती जा रही है।

पश्चिम एशिया में फिलिस्तीनी गाजा में जिस तरह के हालात बनते जा रहे हैं उनसे अब वैश्विक स्तर पर दुनिया के विभिन्न देशों के बीच भी रंजिश बढ़ने का खतरा पैदा होता जा रहा है। गाजा में गत रात्रि जिस तरह इजरायली हमले के दौरान एक अस्पताल पर राकेट गिरने से 500 निरीह बीमार स्त्री–पुरुषों व बच्चों की जान गई है उसने मानवीय त्रासदी को जन्म देकर जारी युद्ध को 'युद्ध अपराध' की श्रेणी में रख दिया है। हालांकि इजरायल कह रहा है कि अस्पताल पर उसकी तरफ से छोड़े गये राकेटों ने हमला नहीं किया बल्कि ये राकेट हमास के ही थे जो निशाना चूक गये थे जबकि हमास का कहना है कि यह काम इजरायली सेना का ही है। विगत 7 अक्तूबर को इजरायल पर हमास ने जो हमला किया था उसमें 1300 से ज्यादा इजरायली नागरिकों की मृत्यु हुई और हमास ने दो सौ नागरिकों को बन्धक भी बनाया। इसके जवाब में इजरायली सेना ने जवाबी हमला गाजा क्षेत्र में किया जिसमें अभी तक तीन हजार लोग हलाक हो चुके हैं। इजरायल ने हमास के आतंकवादी हमले का बदला लेने के लिए पूरे गाजा क्षेत्र को अपने निशाने पर लिया और इसमें भी उत्तरी गाजा के इलाकों को जहां हमास अपने लाव–लश्कर के साथ सक्रिय है। इजरायल के प्रधानमन्त्री एलानिया तौर पर हमास को सबक सिखाने के लिए उत्तरी गाजा के लोगों से कह रहे हैं कि वे इस इलाके को खाली करके दक्षिणी गाजा की तरफ चले जायें क्योंकि इजरायली फौजें अपने टैंकों पर सवार होकर हमास को नेस्तानाबूद करेंगी। इस हिंसा के चक्र के चलने के बाद गाजा के निहत्थे नागरिक बेघर–बार हो रहे हैं और उनकी जान की बाजी लगा कर इजरायल व हमास अपना बदला ले रहे हैं। इजरायल ने उत्तरी गाजा के 11 लाख नागरिकों का बिजली, पानी, रसद व ईंधन बन्द कर दिया है जिसकी वजह से इस क्षेत्र में मानवीय संकट बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही इजरायल विश्व संगठनों द्वारा गाजा के लोगों को भेजी जा रही मदद सामग्री को गाजा में प्रवेश भी नहीं दे रहा है जिसकी वजह से मानव अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्थाओं की चिन्ता बढ़ती जा रही है। इसके समानान्तर इजरायल ने सीरिया के दो हवाई अड्डों पर हमला करके उसे युद्ध से दूर रहने की चेतावनी दे दी है परन्तु इसकी सीमा से लगे दूसरे देश लेबनान में सक्रिय हिजबुल्लाह संगठन ने इजरायल पर राकेट दागे हैं जिसका जवाब इजरायल ने भी दिया है। साथ ही ईरान घोषणा कर रहा है कि इजरायल गाजा की जनता पर जुल्म करने से बाज आये वरना उसके परिणाम भयंकर होंगे। पिछले चार दिनों में उत्तरी गाजा के छह लाख लोग दक्षिण की ओर कूच कर गये हैं और इस मानवीय त्राजली के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन इजरायल पहुंचे हैं। अमेरिका ने पहले ही दिन घोषणा कर दी थी कि वह हमास के हमले से जख्मी हुए इजरायल के साथ डट कर खड़ा हुआ है। उसने अपने दो जंगी जहाजी बेड़ों को भी इलाके के भूमध्यसागर में तैनात कर दिया और लड़ाकू विमानों को भी इजरायल की मदद के लिए तैयार कर दिया। अब सवाल यह है कि इस युद्ध में सामान्य नागरिकों की मृत्यु को रोकने के लिए क्या किया जाये? यह युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के तहत नहीं लड़ा जा रहा है और अस्पताल तक इसकी जद में आ रहे हैं। गाजा में बस्तियों की बस्तियां जमीदोज हो रही हैं और लोग रोटी–पानी व इलाज के लिए तरस रहे हैं। अतः सबसे पहले बाइडेन साहब को यह देखना होगा कि युद्ध को मानवीय संकट खड़ा करने से रोका जाये और बदला केवल हमास व इजरायली फौज के बीच ही हो। यह भी समझने की जरूरत है कि इजरायल व फिलिस्तीन की समस्या की जड़ में कोई धार्मिक मसला नहीं है बल्कि जमीन के मालिकाना हुकूक की समस्या है क्योंकि अरब फिलिस्तीनी जमीन पर ही 1948 में एक अलग स्वतन्त्र देश बनाया गया था जिसे 'इजरायल' कहा गया। भारत ने इसे 1950 में मान्यता प्रदान की और 1992 में इसके साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये। भारत दुनिया भर में शस्त्रों की होड़ के खिलाफ और विश्व शान्ति का पक्षधर रहा। भारत मानता है कि हर देश को अपनी रक्षा करने का अधिकार है मगर किसी भी देश के लोगों का अपनी जमीन पर भी अधिकार होता है। इसी वजह से यह एक स्वतन्त्र व संप्रभु फिलिस्तीन राष्ट्र के हक में शुरू से ही रहा है। प्रधानमन्त्री श्री मोदी का ताजा हालत पर यह कहना कि मानवीय हितों का संरक्षण हर हाल में किया जाना चाहिए बताता है कि भारत हर मसले का शान्तिपूर्ण ढंग से हल चाहता है परन्तु यह समय है कि अमेरिका समेत सभी पश्चिमी देशों को इस क्षेत्र में शान्ति बनाये रखने के लिए अपने सद प्रयास करने चाहिए और किसी स्थायी हल की तरफ चलना चाहिए। क्योंकि राष्ट्रपति बाइडेन के साथ जार्डन, मिस्र व फिलिस्तीनी प्रमुखों ने अपनी बैठक को स्थगित कर दिया है।

राहुल गांधी का अदानी पर नया हमला

यह आरोप लगाकर कि केन्द्र सरकार द्वारा देशवासियों को महंगी बिजली बेचने का उद्देश्य गौतम अदानी को फायदा पहुंचाना है, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मुश्किल में डाल दिया है। मोदी और अदानी के रिश्तों को लेकर राहुल पिछले लम्बे समय से अनेक खुलासे करते आ रहे हैं जिसके चलते मोदी समेत पूरी भारतीय जनता पार्टी की भरपूर किरकिरी हो चुकी है। यह मामला न केवल भारत में वरन विदेशों में भी गूंज रहा है। संसद के भीतर हो या बाहर, राहुल और उनकी पार्टी इस मुद्दे को लेकर मोदी की घेराबन्दी करती आ रही है। नये आरोप यानी मोदी–भाजपा की नयी मुसीबत। बुधवार को राहुल गांधी ने दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में प्रसिद्ध अखबार श्फाइनेंशियल टाइम्सश में छपी एक रिपोर्ट का हवाला देकर आरोप लगाया कि अदानी ने 12 हजार करोड़ रुपये का घोटाला किया है। उनका यह भी कहना था कि अदानी की वजह से ही देशवासियों को महंगी बिजली मिलती है। उनके मुताबिक अदानी इंडोनेशिया से कोयला खरीदते हैं और उसका भाव हिन्दुस्तान में दोगुना हो जाता है। अदानी कोयले की कीमत को गलत दिखाते हैं। कांग्रेस नेता का कहना है कि श्लोग जैसे ही बिजली का स्विच ऑन करते हैं, अदानी की जेब में पैसा जाता है। अदानी की रक्षा भारत के प्रधानमंत्री कर रहे हैं। दुनिया के बाकी देशों में जांच हो रही है लेकिन भारत में अदानी को कोरा चेक दिया गया है। अदानी जो चाहे कर सकते हैं। राहुल का साफ कहना था कि लोग 12 हजार करोड़ रुपये का यह आंकड़ा याद रखें। उन्होंने सवाल किया– श्पीएम अदानी की जांच क्यों नहीं कराते? उल्लेखनीय है कि राहुल पिछले वर्ष कन्याकुमारी से कश्मीर तक निकाली अपनी भारत जोड़ो यात्रा के दौरान कई बार मोदी व अदानी के बीच सांठ–गांठ का आरोप लगाते रहे। इतना ही नहीं, लोकसभा में भी उन्होंने इस मामले को दमदार तरीके से उठाया था। अदानी के हवाई जहाज में बैठकर प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण के लिये दिल्ली आ रहे मोदी की तस्वीर भी उन्होंने संसद में लहराई थी। इसके चलते खूब हंगामा हुआ था। उनके भाषणों के वे हिस्से विलोपित कर दिये गये थे, जिनमें राहुल ने मोदी–अदानी के रिश्तों तथा इस व्यवसायी के कथित घोटालों की पोल खोली थी। इस सबके चलते गुजरात की एक कोर्ट में 2019 के चुनाव प्रचार के दौरान दिये गये एक भाषण को आधार बनाकर राहुल के खिलाफ दाखिल अवमानना मामले की आनन–फानन में सुनवाई कर उन्हें दो साल की सजा दिला दी गई थी। उतनी ही तेज गति से उनकी लोकसभा की सदस्यता छीन ली गई थी। करीब चार माह सदन से बाहर रहने के बाद सुप्रीम कोर्ट द्वारा उनकी सजा पर लगाई गई रोक से सदस्यता बहाल हुई थी। वैसे सदन के भीतर, सदस्यता के निलम्बन के दौरान, वापस आने के बाद और तत्पश्चात सदन के बाहर राहुल की अदानी को लेकर घेराबन्दी हमेशा जारी रही। मोदी उसी कड़ी के रूप में अब यह नयी रिपोर्ट आई है जिसके आधार पर राहुल ने ताजा हमला बोला है। निश्चित है कि इससे मोदी और केन्द्र सरकार पर नये सवालिया निशान उठेंगे। फिर, मोदी पर राहुल का नया आक्रमण ऐसे वक्त पर हो रहा है जब पांच राज्यों की विधानसभाओं के लिये अगले महीने चुनाव होने जा रहे हैं। भाजपा ये सभी चुनाव मोदी के चेहरे पर लड़ रही है जिनमें उन्हें एक सफल व साफ–सुथरी छवि का नेता के रूप में प्रोजेक्ट किया जा रहा है, वैसे ही जिस प्रकार से पिछले एक दशक से होता आया है। हालांकि उनकी यह छवि पहले ही काफी कुछ दरक चुकी है। साथ ही वे सभी मोर्चों पर पूर्णतः नाकाम प्रधानमंत्री भी साबित हो चुके हैं। फिर भी सरकार व संवैधानिक संस्थाओं पर अपनी मजबूत पकड़, संगठन पर एकाधिकार तथा पिछलग्गू मीडिया के बल पर वे अपनी छवि को कथित रूप से यशस्वी पीएम की बनाये रखने की कोशिश करते हैं। ऐसे वक्त में जब मोदी शासनकाल में दुनिया के दूसरे सबसे अमीर बने अदानी को लेकर हिन्डनबर्ग की रिपोर्ट ने मोदी व अदानी को संकट में तो डाला ही था, राहुल को और भी हमलावर बना दिया। उनके बयानों तथा अदानी पर उनके आरोपों की एक तरह से पुष्टि पहले हिन्डनबर्ग रिपोर्ट से हुई। पहले भी प्रतिष्ठित समाचारपत्र फाइनेंशियल टाइम्स ने अदानी को लेकर बड़े खुलासे किये थे। के नेतृत्व में भाजपा हिमाचल प्रदेश व कर्नाटक में चुनाव हार चुकी है और भाजपा पर भ्रष्टाचारियों के साथ मिलकर राज्य की सरकारें बनाने के आरोप हैं, राहुल के नये आरोपों से मोदी की परेशानियां बढ़ना तय है। पहले ही यह माना जा रहा है कि राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम के विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत की गुंजाइश शून्य है, जिसका असर अगले साल के मध्य में होने जा रहे लोकसभा चुनावों पर पड़ेगा। राहुल के इन आरोपों में अगर विपक्षी गठबन्धन इंडिया (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूजिव एलाएंस) ने भी अपने सुर मिलाए तो इसकी गूंज निश्चित ही दूर तलक जाएगी। मोदी व भाजपा को होने वाला नुकसान केवल 5 राज्यों तक सीमित न रहकर सभी तरफ होगा। जम्मू–कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक पहले ही कह चुके हैं कि अदानी का पैसा दरअसल मोदी का पैसा है और मोदी व भाजपा 2024 का चुनाव अदानी की वजह से हारेंगे।' क्या मलिक की बात सच साबित होने जा रही है? संकेत तो ऐसे ही दिखते हैं।

पुतिन–जिनपिंग की गलबहियां

आदित्य नारायण

इस समय विश्व के हालात अच्छे नहीं हैं। एक तरफ रूस–यूक्रेन युद्ध जारी है तो दूसरी तरफ इजरायल–हमास के बीच घमासान मचा हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के इजरायल पहुंचने से पहले ही रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने बीजिंग पहुंचकर चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात कर ली है। पुतिन और जिनपिंग की मुलाकात एक हाई प्रोफाइल शो की तरह हुई जिस पर दुनिया की नजरें लगी हुई थीं। दोनों नेताओं की बातचीत में मिडिल ईस्ट का संकट केन्द्र बिन्दु में रहा। दोनों देशों ने ही इजरायल के एक्शन की आलोचना की। रूस और चीन युद्ध विराम चाहते हैं। यद्यपि कहा यही जा रहा है कि इस मुलाकात का मकसद अमेरिका के खिलाफ दोनों देशों की साझेदारी को मजबूत करना है। हाल ही के वर्षों में रूस–चीन संबंध लगातार गहरे होते जा रहे हैं। पुतिन और जिनपिंग ने व्यक्तिगत मित्रता भी स्थापित कर ली है। पुतिन वन बैल्ट,वन रोड पहल की दसवीं वर्षगांठ के मौके पर हिस्सा लेने चीन पहुंचे हैं। यह पहली बार है कि पुतिन ने इस साल पूर्व सोवियत संघ के बाहर किसी देश का दौरा किया है। चीन और रूस ने फरवरी 2022 में 'नो लिमिट' साझेदारी का ऐलान किया था। इसके कुछ दिन बाद ही पुतिन ने यूक्रेन पर हमले का ऐलान किया। अमेरिका चीन को अपना सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी मानता है और साथ ही रूस को वह अपना सबसे बड़ा खतरा मानता है। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि पुतिन और जिनपिंग ने मिलकर दुनिया का सबसे ताकतवर अघोषित गठबंधन बना लिया है। दुनिया के सबसे ज्यादा परमाणु बमों के मालिक देशों का एक–दूसरे के करीब आने का अर्थ बहुत गहरा है। यद्यपि चीन–रूस की दोस्ती बड़ी जटिल रही है। दोनों देश कभी एक–दूसरे के घमित्र तो कभी दुश्मन रहे हैं। रूस और चीन की लव रिलेशनशिप को भारत के लिए खतरा माना जा रहा है। पश्चिमी देश रूस के घखिलाफ हैं और चीन रूस के गले में बांहें डालकर खड़ा है। रूस भारत का परखा हुआ मित्र है और रूस ने हमेशा संकट के दौर में भारत का साथ दिया है। रूस से दोस्ती के चलते ही भारत ने यूक्रेन–रूस युद्ध पर तटस्थ रुख अपनाया और एक बार घ्भी रूस की निंदा नहीं की। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि पुतिन इस समय दुनिया के नक्शे में अपनी छवि सुधारने का प्रयास कर रहे हैं। बीजिंग में 140 देशों से आए प्रतिनिधियों के बीच पुतिन की मौजूदगी दुनिया में उनकी छवि को बेहतर कर सकती है जो यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में पूरी तरह से अलग–थलग पड़ी हुई है। पुतिन ने भारत में पिछले महीने हुए जी–20 शिखर सम्मेलन में भी हिस्सा नहीं लिया। भारत निश्चित तौर पर इस बात से असहज है कि रूस और चीन करीब आ रहे हैं। इन रिश्तों की वजह से भारत को आशंका है कि चीन एकपक्षीय कार्रवाई करके भारत के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैन्य दबाव बढ़ा सकता है। भारत चीन से निबटने के लिए सेना को मजबूत करने में लगा है। मगर सैन्य आपूर्ति के लिए उसी रूस पर निर्भर है जो अब चीन के करीब हो रहा है। रूस अब चीन का जूनियर पार्टनर है और यह बात भारत को कहीं न कहीं खलती होगी। रूस पर हथियारों की निर्भरता ने इस पूरे मुद्दे को बहुत ही जटिल बना दिया है। यूक्रेन को लेकर भारत की स्थिति ने अमेरिका और यूरोप के साथ करीबी को मुश्किल में डाल दिया है। भारत चीन की वन बैल्ट,वन रोड परियोजना से भी परेशान है। इस परियोजना के जरिये चीन भारत की घेराबंदी कर रहा है, इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत–मध्यपूर्व यूरोप गलियारे का प्रस्ताव दिया था जिसे वन बैल्ट,वन रोड परियोजना का तोड़ माना जा रहा है। रूस ने युद्ध काल में हमेशा भारत का साथ दिया। 1971 की लड़ाई में अमेरिका ने जब बंगाल की खाड़ी में अपना बेड़ा भेजा तो उसको रोकने के लिए रूस ने अपना जंगी बेड़ा भी भेज दिया था। भारत हथियारों के मामले में रूस पर निर्भर रहा। करीब तीन दशक पहले भारत ने रूस के साथ हाथ मिलाया था। दूसरी ओर चीन ने खुद को दुनिया में बहुक्षीय ताकत के तौर पर आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था। यह नया चीन और रूस का गठबंधन यूक्रेन में पुतिन की आक्रामकता के बाद और जटिल हो गया है। जंग की वजह से कमजोर हुआ रूस चीन के लिए किसी दौलत की तरह होगा। यही बात भारत के लिए परेशानी का सबब बन सकती है।

न्यूजीलैंड की टीम पहुंची धर्मशाला, 22 को भारत से खेलेंगी मैच

धर्मशाला। स्थानीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में 22 अक्टूबर को भारत के खिलाफ आईसीसी विश्व कप के लीग मैच के लिए न्यूजीलैंड धर्मशाला पहुंच गई। न्यूजीलैंड की टीम कांगड़ा एयरपोर्ट से सीधे होटल रेडिशन ब्लू पहुंच गई। तय समय से न्यूजीलैंड की टीम करीब दो घंटे देरी से कांगड़ा एयरपोर्ट पर पंहुची। टीम को 3:20 बजे एयरपोर्ट पर पहुंचना था, लेकिन किन्ही कारणों से फ्लाइट दो घंटे देरी से यहां पहुंची। टीम यहां से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच सीधा होटल रेडिसन ब्लू पहुंची। टीम इंडिया का शुक्रवार को धर्मशाला पहुंचने की उम्मीद है। हालांकि अभी तक आधिकारिक तौर पर टीम इंडिया के पहुंचने का कार्यक्रम नही जारी हुआ है। उल्लेखनीय है कि 22 अक्टूबर को धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में आईसीसी विश्व क्रिकेट कप के भारत और न्यूजीलैंड के बीच होने वाले हाई वोल्टेज मैच को देखने के लिए दर्शकों में काफी उत्साह है। मैच को देखने के लिए न सिर्फ प्रदेश के कौने कौने से बल्कि समीपवर्ती राज्यों से भी क्रिकेट के दीवाने धर्मशाला पहंचना शुरू हो गया है। इस मैच के लिए सभी टिकटें ऑनलाइन ही बिक चुकी हैं।

पीकेएल 10 का शेड्यूल जारी, 2 दिसंबर से अहमदाबाद में होगा शुरू

मुंबई। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने ऐतिहासिक दसवें सीज़न के कार्यक्रम की घोषणा कर दी है। प्रो कबड्डी लीग, जो सीज़न 10 के लिए 12-शहर के कारवां प्रारूप में लौट रही है, 2 दिसंबर 2023 को अहमदाबाद के ऐरेना बाय ट्रांसस्टेडिया स्टेडियम में शुरू होगी और उसके बाद प्रत्येक फ्रेंचाइजी के गृह शहरों में स्थानांतरित हो जाएगी। लीग चरण दो दिसंबर 2023 से 21 फरवरी 2024 तक आयोजित किया जाएगा। प्लेऑफ़ के कार्यक्रम की घोषणा बाद में की जाएगी।

लीग इस सीज़न में प्रत्येक फ्रैंचाइज़ी के गृह शहरों से स्टेडियम में वापस आने वाले कबड्डी प्रशंसकों का स्वागत करने के लिए रोमांचित है। अहमदाबाद चरण 2-7 दिसंबर 2023 तक आयोजित किया जाएगा। इसके बाद, लीग बेंगलुरु (8-13 दिसंबर 2023), पुणे (15-20 दिसंबर 2023), चेन्नई (22-27 दिसंबर) 2023), नोएडा (29 दिसंबर 2023 - 3 जनवरी 2024), मुंबई (5-10 जनवरी 2024), जयपुर (12-17 जनवरी 2024), हैदराबाद (19-24 जनवरी 2024), पटना (26-31 जनवरी 2024), दिल्ली (2-7 फरवरी 2024), कोलकाता (9-14 फरवरी 2024) और पंचकुला (16-21 फरवरी) में जायेगा। पीकेएल का दसवां सीज़न गुजरात जायंट्स और तेलुगु टाइटंस के बीच की प्रतिद्वंद्विता को नये सिरे से शुरू करने के साथ शुरू होगा। पवन सहरावत, फज़ल आतराचली, अर्जिक्य पवार और नवीन कुमार जैसे शीर्ष सितारे शुरुआती सप्ताहांत में हाई-ऑक्टेन क्लैश के माध्यम से प्रशंसकों को मंत्रमुग्ध करने के लिए तैयार हैं।

गोवा में राष्ट्रीय खेल शुरू, प्रधानमंत्री मोदी 26 को करेंगे औपचारिक उद्घाटन

पणजी। 37वें राष्ट्रीय खेलों का औपचारिक उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 26 अक्टूबर को शाम 6.30 बजे गोवा में करेंगे। हालांकि औपचारिक उद्घाटन से काफी पहले बैडमिंटन टूर्नामेंट के खेलों से शुरुआत हो गई। गुरुवार सुबह यहां डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी इंडोर स्टेडियम में मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत, खेल मंत्री गोविंद गौडे और अन्य की मौजूदगी में बैडमिंटन टूर्नामेंट की शुरुआत हुई। इस मौके पर मुख्यमंत्री सावंत ने कहा, ÷यह वह सपना है जिसे हमने पिछले 10 वर्षों से संजोकर रखा है और यहां इस कार्यक्रम की मेजबानी के लिए बहुत प्रयास किए गए हैं। राष्ट्रीय खेलों का यह संस्करण अत्यंत सफल होगा। मुझे उम्मीद है कि यह भविष्य में एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और ओलंपिक में चमकने के लिए सभी एथलीटों के लिए एक आदर्श मंच के रूप में काम करेगा। उन्होंने कहा, हालांकि गोवा अपने समुद्र और रेत के लिए प्रसिद्ध है, हम चाहते हैं कि इसकी खेल क्षमता के लिए भी इसे समान रूप से मनाया जाए।

गोविंद गौडे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास एक महान दृष्टिकोण है और वह भारत को खेल के क्षेत्र में आगे ले जाने के लिए प्रत्येक एथलीट को प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने कहा, उसी के अनुरूप, हम 37वें राष्ट्रीय खेल गोवा के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हमें यकीन है कि यह टूर्नामेंट बेहद सफल होगा।

होल्गर रूना ने छह बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन बोरिस बेकर को अपना कोच बनाया

मोंटे कार्लो। विश्व नंबर 6 होल्गर रूना ने छह बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन बोरिस बेकर को अपना कोच नियुक्त किया है।

एटीपी रैंकिंग में पूर्व नंबर 1 बोरिस बेकर ने पहले नोवाक जोकोविच को उनकी कुछ महानतम ऊंचाइयों तक पहुंचने में सहायता की है। जर्मन खिलाड़ी ने एक खिलाड़ी के रूप में 49 टूर-स्तरीय खिताब और 713 मैच जीते, जिसमें शीर्ष 10 विरोधियों पर 121 जीत शामिल हैं।

पिछले हफ्ते, रूना ने एक टीम की तस्वीर पोस्ट की, जिसमें प्रशिक्षण सत्र के बाद बेकर भी शामिल थे। रूना को पहले हाफ में

प्रभावशाली प्रदर्शन के बाद अपने 2023 सीज़न को पुनर्जीवित करने की उम्मीद है जिसमें मोंटे-कार्लो और रोम में एटीपी मास्टर्स 1000 फाइनल, म्यूनिख में उनकी चौथी टूर-स्तरीय जीत और रोलैंड गैरोस और विंबलडन में क्वार्टर फाइनल प्रदर्शन शामिल हैं। अगस्त में करियर की सर्वोच्च एटीपी रैंकिंग नंबर 4 पर पहुंचने के बावजूद, ग्रास कोर्ट सीजन शुरू होने के बाद से उन्होंने आठ मैचों में से केवल एक ही जीता है।

स्टॉकहोम में इस सप्ताह की शुरुआत में हारने के बाद रूना ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया, मैंने खुद को और अपने खेल को पिछले कुछ समय की तुलना में आज अधिक महसूस किया। इसलिए अब मैं आखिरी समायोजन करने और साल को मजबूत तरीके से खत्म करने में आश्वस्त महसूस कर रहा हूं।

वीनस विलियम्स अगले साल मार्च में बना रही हैं पेशेवर टेनिस में वापसी का लक्ष्य

नई दिल्ली। पूर्व विश्व नंबर 1 टेनिस खिलाड़ी अमेरिका की वीनस विलियम्स का अभी अपने टेनिस करियर को अलविदा कहने का कोई इरादा नहीं है, क्योंकि उन्होंने खुलासा किया है कि वह अगले साल मार्च में पेशेवर टेनिस में वापसी का लक्ष्य बना रही हैं। विलियम्स ने इस सप्ताह कहा था कि विंबलडन में एलिना स्वितोलिना के हाथों पहले दौर में मिली हार ने न केवल 2023 की चौथी तिमाही बल्कि 2024 की शुरुआत को भी बाधित कर दिया था। लेकिन टेनिस.कॉम के साथ हाल ही में एक साक्षात्कार में, 43 वर्षीय ने कहा कि वह अब अगले मार्च में वापसी का लक्ष्य बना रही हैं। विलियम्स ने कहा, ÷मैंने यूएस ओपन के लिए उबरने की पूरी कोशिश की। मैं अपने फॉर्म तक नहीं पहुंच पाई इसलिए अब मैं वापस आने तक आराम कर रही हूं। मैं मार्च को लक्ष्य बना रही हूं।विंबलडन में उस दुर्भाग्यपूर्ण हार के बाद विलियम्स ने तीन इवेंट खेले। वह मॉन्ट्रियल में पहले दौर में झेंग किनवेन से हार गईं और फिर सिनसिनाटी में शुरुआती दौर में उन्होंने वेरोनिका कुदरमेतोवा को हराया। इसके बाद सीजन के उनके आखिरी मैच में उन्हें यूएस ओपन के पहले दौर में बेल्जियम की ग्रीट मिन्नेन से 6-1, 6-1 से हार का सामना करना पड़ा था।2023 में, विलियम्स ने सात स्पर्धाओं में भाग लिया और 3-7 का रिकॉर्ड बनाया, लेकिन ऑकलैंड में एएसबी क्लासिक में लगी चोट के कारण उनका प्रतिस्पर्धी कार्यक्रम काफी बाधित हो गया, जिससे उन्हें लगभग छह महीने तक बाहर रहना पड़ा।

यूनाइटेड कप टीम इवेंट में हिस्सा लेंगे नोवाक जोकोविच, इगा स्विएटेक

सिडनी। रिकॉर्ड 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन नोवाक जोकोविच और महिला एकल विश्व नंबर 1 इगा स्विएटेक यूनाइटेड कप में हिस्सा लेंगे। यूनाइटेड कप 29 दिसंबर से 7 जनवरी 2024 तक पर्थ और सिडनी में आयोजित किया जाएगा।

2024 में मिश्रित टीम स्पर्धा में दुनिया की शीर्ष दस महिलाओं में से पांच और दुनिया के शीर्ष बीस पुरुषों में से नौ शामिल होंगी, जिसका ड्रा सोमवार को जारी किया जाएगा। 24 बार के प्रमुख चैंपियन और वर्तमान विश्व नंबर 1 जोकोविच के नेतृत्व में सर्बिया 2024 में पदार्पण करेगा।

टीम पोलैंड की कप्तानी चार बार के ग्रैंड स्लैम विजेता स्विएटेक और 11वीं रैंकिंग वाले ह्यूबर्ट हर्काज़ करेंगे, जिन्हें शीर्ष 16 देशों से पंजीकरण की पुष्टि के बाद 2024 संस्करण के लिए शीर्ष वरीयता दी गई है। ग्रीस का नेतृत्व स्टेफानोस सितसिपास और मारिया सक्कारी करेंगे, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रतिनिधित्व विश्व नंबर 4 जेसिका पेगुला और 10वीं रैंकिंग

वाले टेलर फ्रिट्ज़ करेंगे। इस साल की विंबलडन विजेता मार्केटा वोंद्रोसोवा जिरी लेहेका के साथ चेक गणराज्य टीम का नेतृत्व करेंगी, जबकि क्रोएशिया बोर्ना कोरिक और डोना वेकिक के नेतृत्व में हिस्सा लेगा। ।

ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व शीर्ष ऑस्ट्रेलियाई एलेक्स डी मिनौर करेंगे, साथ ही तीन बार के प्रमुख क्वार्टर फाइनलिस्ट अजला टोमलजानोविक, युगल खिलाड़ी स्टॉर्म हंटर, मैट एबडेन और एलेन पेरेज़ और पूर्व विश्व नंबर एक खिलाड़ी जॉन मिलमैन होंगे।

यूनाइटेड कप टूर्नामेंट निदेशक स्टीफन फैरो ने एक बयान में कहा, यूनाइटेड कप वैश्विक टेनिस में एक अद्वितीय स्थान रखता है, जिसमें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पुरुष और महिलाएं उच्चतम स्तर पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। 2024 के लिए हम विशाल स्टार पावर और महान गहराई दोनों के साथ टीमों का स्वागत करते हुए प्रसन्न हैं। उन्होंने आगे कहा, शीर्ष 16 टीमों में टेनिस के कुछ सबसे बड़े नाम शामिल हैं, जैसे कि जोकोविच, स्विएटेक, सितसिपास, पेगुला, फिट्ज़, सक्कारी, डी मिनौर, टॉमलजानोविक, ज्वेरेव, कर्बर और अन्य। वे सभी डिज़ाइन किए गए प्रारूप में खेलने के लिए तैयार हैं।

सलीमा, संगीता, निक्की प्रधान घरेलू प्रशंसकों के सामने प्रदर्शन के लिए उत्साहित

रांची। भारतीय महिला हॉकी टीम की खिलाड़ी सलीमा टेटे, निक्की प्रधान और संगीता कुमारी ने प्रतिष्ठित झारखंड महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2023 में घरेलू दर्शकों के सामने प्रदर्शन करने को लेकर काफी उत्साहित हैं। यह टूर्नामेंट 27 अक्टूबर से 5 नवंबर तक चलेगा, जिसमें भारत, जापान, चीन, कोरिया, मलेशिया और थाईलैंड की टीमें प्रतिस्पर्धा करेंगी। सविता टूर्नामेंट में भारतीय महिला हॉकी टीम का नेतृत्व करेंगी और दीप ग्रेस एक्का उनकी डिप्टी होंगी। भारत टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत शुक्रवार, 27 अक्टूबर 2023 को थाईलैंड के खिलाफ करेगा।

भारतीय महिला हॉकी टीम की फॉरवर्ड संगीता ने प्रमुख टूर्नामेंट के लिए रांची लौटने पर उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, मैंने अपना पहला टूर्नामेंट रांची में तब खेला था जब मैं अंडर-14 टीम में थी और हमने हॉकी झारखंड के लिए कांस्य पदक जीता था। बाद में, मैंने यहां सब जूनियर स्तर पर भी खेला। हालांकि, रांची में इतने बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन में भाग लेने का यह मेरा पहला मौका होगा। मैं घरेलू प्रशंसकों के सामने जाने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का और इंतजार नहीं कर सकती। संगीता को बचपन में शहर में मैच खेलने की अच्छी यादें हैं और वह राज्य में हॉकी के विकास पर गर्व महसूस करती हैं।

उन्होंने कहा, जब मैं छात्रावास पहुंची, तो वहां कुछ सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। पहले, राज्य से केवल कुछ ही खिलाड़ी निकलते थे। हालांकि, अब झारखंड में राष्ट्रीय टीम में कई खिलाड़ी हैं। हॉकी टर्फ और उपकरण सहित सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। पिछले कुछ वर्षों में, हॉकी इंडिया और झारखंड सरकार ने राज्य में हॉकी के विकास को सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की है।

इस बीच, भारतीय महिला हॉकी टीम की डिफेंडर निक्की प्रधान, जो पहले ही भारत के लिए 150 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुकी हैं, ने कहा कि टूर्नामेंट से राज्य के युवा खिलाड़ियों को मदद मिलेगी। उन्होंने कहा, मुझे खुशी है कि हॉकी इंडिया और झारखंड सरकार ने यहां रांची में इस तरह के एक प्रतिष्ठित टूर्नामेंट का आयोजन करने का फैसला किया है। राज्य में हॉकी बढ़ रही है, और यह टूर्नामेंट खेल के उत्थान को और बढ़ावा देगा। जल्द ही, वह समय आएगा जब हमारा राज्य अपने सर्वश्रेष्ठ हॉकी खिलाड़ियों के कारण जाना जाएगा। राज्य में हमारे युवा खिलाड़ियों को भी इस टूर्नामेंट से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। निक्की ने यह भी खुलासा किया कि उनके परिवार के सदस्य रांची में भी अंतरराष्ट्रीय हॉकी खेलते हुए देखने के लिए उत्सुक हैं और उन्हें उम्मीद है कि टूर्नामेंट शुरू होने के बाद वे स्टेडियम को पैक कर देंगे।

बांग्लादेश के खिलाफ एक और सफल रन चेज़ पर गिल ने कहा- हमारा लक्ष्य अपनी लय को जारी रखना

पुणे। आईसीसी क्रिकेट विश्व कप में बांग्लादेश पर अपनी टीम की सात विकेट से जीत के बाद, भारतीय सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने कहा कि टीम का लक्ष्य अब तक अपने सभी चार मैचों में आसान लक्ष्य का पीछा करने के बाद अपनी लय को जारी रखना है। उन्होंने कहा कि टूर्नामेंट से पहले टीम इतने अच्छे लक्ष्य का पीछा करने में सक्षम नहीं थी।

उन्होंने अपना पहला विश्व कप अर्धशतक बनाने पर भी खुशी व्यक्त की और कहा कि वह सीख रहे हैं कि विश्व कप के दौरान विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे सीनियर बड़े मैचों में कैसे बल्लेबाजी करते हैं। कप्तान रोहित शर्मा और शुभमन गिल के बीच पहले विकेट के लिए हुई विस्फोटक साझेदारी और उसके बाद विराट कोहली के 48वें वनडे शतक की बदौलत भारत ने गुरुवार को पुणे में आईसीसी क्रिकेट विश्व कप मैच में बांग्लादेश पर सात विकेट से जीत दर्ज की।

गिल ने मैच के बाद कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, आप देख सकते हैं कि वे (शीर्ष क्रम के बल्लेबाज) कितने आश्वस्त हैं, जिस तरह से वे रन बना रहे हैं। निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि यह उन चीजों में से एक है जो थी इस बारे में बात की गई, विशेष रूप से विश्व कप से पहले, कि हम उतने अच्छे, उन बड़े लक्ष्यों का पीछा नहीं कर रहे थे, लेकिन मुझे लगता है कि लक्ष्य का पीछा करते हुए सभी चार मैच जीते हैं, मुझे लगता है कि उन बड़े लक्ष्यों में हमारे साथ उस गति को बनाए रखने का यह एक शानदार तरीका है खेल जिन्हें हम आगे बढ़ाएंगे।

गिल ने कहा, निश्चित रूप से (अर्धशतक लगाने पर) अच्छा महसूस हुआ। जब मैं थोड़ा बीमार था, तो उन अवसरों को चूकने से मैं थोड़ा निराश महसूस कर रहा था, लेकिन कुछ खेल का समय पाकर निश्चित रूप से अच्छा महसूस हुआ। रोहित और विराट से सीखने पर गिल ने कहा कि वह सीखने

की कोशिश कर रहे हैं कि वे बड़े मैचों में कैसे खेलते हैं। गिल ने कहा, उन्हें देखना कि वे विश्व कप और बड़े खेलों में अपना काम कैसे करते हैं, यही वह है जो मैं हमेशा उनसे सीखने की कोशिश करता हूं। मुझे लगता है कि कभी-कभी बहुत आक्रामक होने या शेल में जाने, खासकर बड़े खेल खेलने के बीच एक अच्छी रेखा होती है। मुझे लगता है कि वे जिस तरह से खेलते हैं, जिस तरह से उनकी मानसिकता विश्व कप में उन बड़े मैचों को खेलने की है, मैं उनसे सीखने की कोशिश करता हूं।

विश्वकप 2023 : भारत ने बांग्लादेश को सात विकेट से हराया, कोहली ने जड़ा 48वां शतक

पुणे। रन मशीन विराट कोहली बांग्लादेश के खिलाफ खेले विश्वकप 2023 के मुकाबले में नया माइलस्टोल बनाया है। एक ओर जहां उन्होंने छक्का लगाकर भारत को जीत दिलवाई, वहीं एकदिवसीय मैच में अपना 48वां शतक भी पूरा किया।

इतना ही नहीं एकदिवसीय मैचों में 26 हजार रन बनाने वाले चौथे बल्लेबाज भी बन गए हैं। उनसे आगे अब सचिन तेंदुलकर, सांगकारा और रिकी पोंटिंग हैं।

एकदिवसीय विश्व कप 2023 के 17वें मुकाबले में भारत ने बांग्लादेश को सात विकेट से हरा दिया है। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए आठ विकेट पर 256 रन बनाए। पुणे के एसीएम स्टेडियम में गुरुवार को भारत-बांग्लादेश के बीच खेले गए इस मैच में भारत ने तीन विकेट

गंवाकर 41.3 ओवर में ही 257 रन का लक्ष्य हासिल कर लिया।

भारत के लिए विराट कोहली ने नाबाद 103 रन बनाए। शुभमन गिल ने 53 और रोहित शर्मा ने 48 रन का योगदान दिया। लोकेश राहुल ने भी नाबाद 34 रन बनाए। बांग्लादेश के लिए मेहदी हसन ने दो और हसन महमूद ने एक विकेट लिया। वहीं बांग्लादेश के लिए सबसे ज्यादा 66 रन लिटन दास ने बनाए। जबकि तंजीद हसन ने 51 रन की पारी खेली। अंत में महमुदुल्लाह ने 46 रन की पारी खेल टीम का स्कोर 250 रन के करीब पहुंचाया।

मुश्फिकुर रहीम ने 38 रन का योगदान दिया। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और रवींद्र जडेजा ने दो-दो विकेट लिए। शार्दुल ठाकुर और कुलदीप यादव को एक-एक विकेट मिला। भारत का अगला मैच न्यूजीलैंड के साथ है। दोनों टीमें अंक तालिका में शीर्ष दो स्थानों पर हैं और यही दोनों टीमें हैं, जो अब तक अजेय हैं। ऐसे में 22 अक्टूबर को होने वाला यह मैच बेहद रोमांचक होगा।

न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच से बाहर हुए हार्दिक पांड्या

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के उप-कप्तान हार्दिक पांड्या न्यूजीलैंड के खिलाफ 22 अक्टूबर को धर्मशाला में होने वाले विश्व कप मैच का हिस्सा नहीं होंगे। हार्दिक को पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में बांग्लादेश के खिलाफ मैच के दौरान अपनी ही गेंदबाजी पर क्षेत्ररक्षण करते समय बाएं टखने में चोट लग गई थीभारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने शुक्रवार को एक आधिकारिक बयान में कहा, ऑलराउंडर को स्कैन के लिए ले जाया गया और उन्हें आराम की सलाह दी गई है। वह बीसीसीआई की मेडिकल टीम की लगातार निगरानी में रहेंगे, वह 20 अक्टूबर को टीम के साथ धर्मशाला के लिए उड़ान नहीं भरेंगे और अब सीधे लखनऊ में टीम से जुड़ेंगे जहां भारत इंग्लैंड से खेलेगा।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मुकाबले में खेलने के लिए फिट हैं बेन स्टोक्स

नई दिल्ली। स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स ने पुष्टि की है कि वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ इंग्लैंड के महत्वपूर्ण आईसीसी क्रिकेट विश्व कप मुकाबले में खेलने के लिए फिट हैं। शनिवार को इंग्लैंड का मुकाबला दक्षिण अफ्रीका से होगा। हालांकि इंग्लैंड ने टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में न्यूजीलैंड से नौ विकेट की हार के बाद बांग्लादेश पर जीत के साथ वापसी की, लेकिन दिल्ली में अफगानिस्तान के सामने उन्हें करारा झटका लगा। दक्षिण अफ्रीका ने भी श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जीत के साथ अच्छी शुरुआत की थी, लेकिन नीदरलैंड्स के खिलाफ उलटफेर का शिकार हो गया, जिसने क्वालीफायर के जरिए टूर्नामेंट में जगह बनाई थी।

स्टोक्स कूल्हे की चोट के कारण टीम के पहले तीन मैचों में नहीं खेले थे। वह इंग्लैंड को खिताब बचाने में मदद करने के लिए वनडे संन्यास से वापस आये

थे। स्टोक्स का प्लेइंग इलेवन में होना निस्संदेह इंग्लैंड के लिए फायदेमंद होगा। स्टोक्स ने कहा कि टूर्नामेंट शुरू होने से पहले परेशानी का सामना करना निराशाजनक था। ईएसपीएनक्रिकइंफो के हवाले से स्टोक्स ने कहा, टूर्नामेंट शुरू होने से पहले यह एक निराशाजनक छोटी सी परेशानी थी। लेकिन मैं जहां हूं वहां वापस पहुंचने के लिए और खुद को चयन के लिए उपलब्ध होने के लिए तैयार करने के लिए मैंने बहुत मेहनत की है। उन्होंने कहा, अंतिम मैच और यहां मुंबई में पहले प्रशिक्षण सत्र के बाद से हमें कुछ दिनों की छुट्टी मिली है। मैं]इसे अच्छी तरह से आगे बढ़ाऊंगा, लेकिन हां, मुझे लगता है कि सब कुछ बहुत अच्छा है। मैं अच्छी जगह पर हूं। स्टोक्स ने कहा कि इंग्लैंड को टूर्नामेंट में अभी लंबा सफर तय करना है और टीम को अपनी हार से जल्द उबरना होगा क्योंकि ऐसा सभी के साथ होगा।

उन्होंने कहा, हम एक टूर्नामेंट में तीन मैच खेल चुके हैं। अभी भी बहुत लंबा सफर तय करना बाकी है। फिलहाल अफगानिस्तान से हार निराशाजनक है, लेकिन दिन के अंत में, हम विश्व कप एक मैच हार गए हैं। हर कोई मैच हार रहा है और यह उन चीजों में से एक है जिससे हमें जल्दी से निपटना होगा, समझें कि हमने अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है लेकिन आगे बढ़ें, और समझें कि हमारे पास खेलने के लिए बहुत अधिक क्रिकेट बाकी है।

अधिकांश अंग्रेजी खिलाड़ियों के साथ उनका परिवार भी है। मुंबई पहुंचने के बाद टीम को पूरे दो दिन की छुट्टी मिली।

यूईएफए ने सुरक्षा स्थिति के कारण अगली सूचना तक इज़राइल में मैचों को निलंबित किया

जेरूसलम। यूईएफए ने घोषणा की है कि उसका कोई भी प्रतियोगिता मैच अगली सूचना तक इज़राइल में आयोजित नहीं किया जाएगा। इज़राइल फुटबॉल एसोसिएशन (आईएफए) ने यूईएफए के फैसले का हवाला देते हुए कहा, यूईएफए ने कहा कि उसने इज़राइल के पूरे क्षेत्र में वर्तमान सुरक्षा और सुरक्षा स्थिति का गहन मूल्यांकन करने के बाद निर्णय लिया है। इज़राइली चैंपियन मैकाबी हाइफ़ा, जो यूईएफए यूरोपा लीग में भाग लेता है, और मैकाबी तल अवीव, जो यूईएफए यूरोपा कॉन्फ्रेंस लीग में खेलता है, को आईएफए के साथ मिलकर अपने घरेलू मैचों के लिए इज़राइल के बाहर वैकल्पिक स्टेडियम की पेशकश करने के लिए कहा गया है। मैकाबी हाइफ़ा का स्पेन में विलारियल के खिलाफ अगला मैच 26 अक्टूबर से 6 दिसंबर तक पुनर्निर्धारित किया गया था, जबकि इसका अगला घरेलू मैच, विलारियल के खिलाफ भी, 9 नवंबर को निर्धारित किया गया है। मकाबी तल अवीव का यूक्रेन के ज़ोर्या लुहान्स्क के खिलाफ घरेलू मैदान पर अगला मैच 26 अक्टूबर से 25 नवंबर तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। इज़राइल क्रमशः 15 और 18 नवंबर को स्विट्जरलैंड और रोमानिया के खिलाफ यूईएफए यूरो 2024 क्वालीफाइंग मैचों की मेजबानी करने वाला है। यदि यूईएफए का निर्णय अभी भी प्रभावी है, तो दोनों मैचों को तटस्थ स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाएगा।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण, जागरूकता अभियानः शिवानी जैन एडवोकेट

ऑल ह्यूमन सेव एंड फॉरेंसिक फाउंडेशन डिस्टिक वूमेन चौफ शिवानी जैन एडवोकेट ने कहा कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान के तहत स्वास्थ्य विभाग एवं अन्य सहयोगी विभाग, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा लोगों को घर-घर जाकर प्रचार-प्रसार के माध्यम से बीमारियों से बचाव के लिए जागरूक किया जाए। जिससे संचारी रोगों से लोगों को ग्रसित होने से बचाया जा सके। साथ ही इस दौरान सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाए।हम सभी शपथ लेते हैं कि संचारी रोगों से लड़ाई में हम हर संभव प्रयास करेंगे कि हमारे परिवार और समुदाय इन लोगों से मुक्त रहें। डॉक्टर आरके शर्मा ने बताया कि संचारी रोगों से बचने के लिए कई उपाय हैं जो लोग अमल में लाकर इनसे अपना ओर समाज का बचाव कर सकते हैं, जैसे कि दरवाजे व खिड़कियों पर जाली लगवाएं। नियमित मच्छरदानी का प्रयोग करें। ग्लोबल ओनर यूनिवर्सिटी डायरेक्टर ऑफ़ एकेडमिक डॉ कंचन जैन, डॉ राजेंद्र कुमार जैन, ने कहा कि संचारी रोगों से बचने के लिए जल

भराव को रोकने एवं स्वच्छता रखने के लिए जागरूक किया जाए। उन्होंने कहा कि अपने आसपास गंदगी न जमा होने दें। गंदगी से विभिन्न प्रकार के संक्रमण रोग पैदा होते हैं। खाना खाने से पहले अच्छी तरह से हाथ को साबुन से धोएं। शार्क फाउंडेशन की तहसील प्रभारी डॉ एच सी अंजू लता जैन, शालू सिंह एडवोकेट, सुनीता जी, विमला चौधरी, मां सरस्वती शिक्षा समिति के प्रबंधक डॉ एच सी विपिन कुमार जैन, डॉ नरेंद्र चौधरी निर्देशक, संरक्षक आलोक मित्तल एडवोकेट, ज्ञानेंद्र चौधरी एडवोकेट, डॉ एम के वर्मा, आदि ने कहा इस अभियान के अन्तर्गत स्वास्थ्य विभाग की टीम घर-घर जाकर लोगों को संचारी रोगों के बारे में बतायेगी और उससे बचाव की जानकारी देगी। आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता लोगों को अपने आसपास साफ-सफाई रखने के लिये प्रेरित करेंगी। बुखार होने पर बच्चों को बिना किसी देरी के उपचार के लिए सरकारी अस्पताल ले जायें। संचारी रोगों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हेल्पलाइन नंबर 18001805145 पर भी संपर्क कर सकते हैं।

यारियां 2 का गाना पीने दे हुआ रिलीज़ - दिव्या खोसला कुमार, मीजान जाफरी और पर्ल वी पुरी ने दिया परफेक्ट पार्टी सॉन्ग

इस पैपी नंबर की सबसे खास बात यह है कि यह आपको पार्टी मोड़ में डाल देगा। चचेरे भाई-बहनों के शहर घूमने के बैकग्राउंड पर आधारित

इस गाने में वह सब कुछ है जो आपको थिरकने पर मजबूर कर देगा। पीने दे को मास्टर सलीम ने गाया है और इसका रैप मिलिंद गाबा ने दिया है। ये कहना गलत नहीं होगा कि संगीत निर्देशक, गीतकार और संगीतकार मनन भारद्वाज ने भी पीने दे से दर्शकों की नब्ज को बखूबी पकड़ा है। यारियां 2 एल्बम के बारे में आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें हर किसी के लिए कुछ न कुछ है। जहां सिमरून तेरा नाम रोमांटिक एहसास देता है, वहीं सौरे घर और पीने दे एक उत्साहित उत्सव का माहौल पेश करता है। ऐसा कहने के बाद, पीने दे एक ऐसा नंबर है जो हर पार्टी और शादी की प्लेलिस्ट में अपनी जगह बनाएगा। इस फिल्म में दिव्या खोसला कुमार, यश दासगुप्ता, मीजान जाफरी, अनास्वरा राजन, वरीना हुसैन, प्रिया वारियर और पर्ल वी पुरी सहित कई शानदार कलाकार हैं। गुलशन कुमार और टी-सीरीज़ द्वारा प्रस्तुत यह फिल्म टी-सीरीज़ फिल्म्स और राव एंड सप्रू फिल्म्स का संयुक्त निर्माण है। यह म्यूजिक, प्यार और ड्रामा से भरी एक मनोरंजक यात्रा का वादा करते हुए, आज सिनेमाघरों में रिलीज हो चुकी है।

पैराशूट प्रत्यासी जमीनी कार्यकर्ता की लोकप्रिय ज्यादा कार्यालय के शुभारंभ कुर्सियां रही खाली राम का विरोध पड़ा भारी भीड़ नहीं जुटा पाई जयश्री

बैरसिया नगर में विधानसभा चुनाव को लेकर जहां एक और धूम मची हुई है वहीं दूसरी और 20 वर्षों से निरंतर नगर में अपनी व्यवहार कुशलता के दम पर अपनी पहचान बनाने वाले राम भाई मेहर को कांग्रेस ने टिकट नहीं दिया उनके बदले पूर्व में भाजपा से पराजित प्रत्याशी जयश्री हरिकारण की आधिकारिक घोषणा कि वह पूर्व में भी भाजपा प्रत्याशी विष्णु खत्री से लगभग 14000 वोटो से पराजित हुई थी। कांग्रेस के टिकट वितरण के विरोध का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि कांग्रेस प्रत्यासी द्वारा आज कार्यालय का शुभारंभ किया गया जिसमें सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता पहुंचने की उम्मीद थी। परंतु विरोध इतना है की अपने आप को कांग्रेस का सिपाही कहने वाले कार्यकर्ता क्यों नाराज ही ये जानने का प्रयास किया तो नाम न बताने की शर्त पर एक वरिष्ठ कार्यकर्ता ने बताया की पैराशूट प्रत्यासी के द्वारा हमेशा महानती कार्यकर्ताओं का हक छीन कर उनके के साथ धोखा किया जिसके चलते वहा कार्यकर्ता पार्टी के कार्यक्रम में आने से कतरा रहे है अब देखने वाली बात है पार्टी के पार्टी को कार्यकर्ताओं की नाराजगी का खामियाजा पार्टी को आने वाले चुनाव में किस कीमत पर चुकाना पड़ेगा यह देखने वाली बात है।

नकारात्मकता का नाश करने वाली मां कालरात्रि आज्ञाचक्र व सहस्रार चक्र के मध्य स्थित शक्ति हैं

नवरात्रि की सप्तमी तिथि के दिन देवी दुर्गा के सातवें स्वरूप कालरात्रि का पूजन - अर्चन किया जाता है। शास्त्रों के अनुसार माता कालरात्रि आज्ञा चक्र से सहस्रार चक्र के मध्य की शक्ति है, जो नकारात्मकता का नाश करने वाली हैं। कालरात्रि की जागृति से समस्त भय व बाधाएं समाप्त हो जाती हैं। कालरात्रि देवी का स्वरूप साक्षात् काल के समान भयंकर है परंतु अपने भक्तों के लिए यह शुभ फल प्रदायिनी शुभंकरी होती हैं। मां कालरात्रि मानव के भीतर विद्यमान सप्तम शक्ति केंद्र हैं। कालरात्रि मुख्यतः योगहृदय यानी आज्ञा चक्र का उच्चतम बल हैं। मां कालरात्रि के जागरण से सहस्रार चक्र में हलचल होने लगती है और शाश्वत सत्य व ज्ञान के समस्त द्वार स्वयं ही खुलने लगते हैं। सहजयोग संस्थापिका श्री माताजी निर्मला देवी जी कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति में सहस्त्रार चक्र की भूमिका व विशेषता का वर्णन करते हुए कहा है कि, सहस्रार का सार समग्रीकरण है। सहस्रार में सारे चक्र अर्थात् सब देवी-देवताओं का समग्रीकरण है और आप इनके समग्रीकरण की अनुभूति कर सकते हैं, अर्थात् जब आपकी कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है तो आपका मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी इसी में विलय हो जाता है, आपकी

कोई भी समस्या नहीं रहती । आपके व्यक्तित्व का पूर्ण समग्रीकरण आवश्यक है। ..इसके लिये सामर्थ्य अन्दर से आती है, आपकी आत्मा आपको बल प्रदान करती है, आप बस अपनी संकल्प शक्ति लगाते हैं कि हाँ मेरी आत्मा काम करे और आप अपनी आत्मा के अनुसार कार्य करने लगते हैं, तो आप देखने लगते हैं कि आप किसी चीज़ के दास नहीं हैं, आप समर्थ हो जाते हैं, अर्थात् सम+अर्थ, अपने अर्थ के समतुल्य समर्थ का अर्थ शक्तिशाली व्यक्तित्व भी है, तो आप एक शक्तिशाली व्यक्तित्व बन जाते हैं। जिसमें कोई भी प्रलोभन नहीं होता, कोई भी असद् विचार नहीं होता, कोई पकड़ नहीं होती और कोई समस्या नहीं होती। आप ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जहाँ आप निरानन्द को पाते हैं, और यह निरानन्द आपको मिलता है जब आप पूर्णतया आत्मस्वरूप बन जाते हैं। योग होने के बाद मनुष्य का मन सब चीजों से हटकर परमात्मा की ओर लग जाता है, सारी प्राथमिकतायें आपकी बदलकर आप दूसरे ही आदमी हो जाते हैं, उसी शान्ति में समाये रहते हैं जो आत्मा की देन है। आत्मा का जो स्वरुप है उस सत्य को आप जान जाते हैं। अतः इस नवरात्रि सहस्त्रार चक्र शक्तियों का साक्षात करने के लिए कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने हेतु और टोल फ्री नम्बर 18002700800 पर सम्पर्क करें।

लीजिए आ गया इंद्र का सिंहासन! मिल गया स्वर्ग जाने का रास्ता!

जी हां बिल्कुल सच बात! अब आपको स्वर्ग जाने का रास्ता और रहस्य मालूम हो जायगा जब आप इस दिव्य पुस्तक को बड़े ही ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे. इस दिव्य पुस्तक में इंद्र देव के सिंहासन के प्राप्त करने की विधि बताई हैं और इसमें हर तरह के रहस्य को उजागर किया गया हैं. ये दिव्य पुस्तक इतनी दिव्य हैं कि आपको इसको पढ़ कर खुद मे ही दिव्यता का एहसास होने लगेगा. इस पुस्तक में स्वर्ग जाने का रास्ता और रहस्य भी बताया गया हैं और सबसे अच्छी बात की इस पुस्तक को पढ़ कर आप किस तरह से सच्चाई के रास्ते पर चलेंगे ये बात भी बहुत अच्छे से बताई गयी हैं. इस पुस्तक को लिखा हैं भारत के भविष्यवक्ता अभिषेक सिंघल और रूपा आनंद जी ने और इस पुस्तक को प्रकाशित किया हैं देहरादून के पार्थ पब्ड्लि%केशड्न्ड् ने. 20 अक्टूबर 2023 को दिल्ली मे ये दिव्य पुस्तक को अभिषेक सिंघल जी ने लॉन्च किया. इस पुस्तक में दिव्य मंत्र भी दिए हैं जिसको जपने के बाद जीवन धन्य हो जायगा. उम्मीद हैं इस पुस्तक में दिए असली रहस्य धर्म के दुनिया मे नया क्रांति लेकर आयेगी.

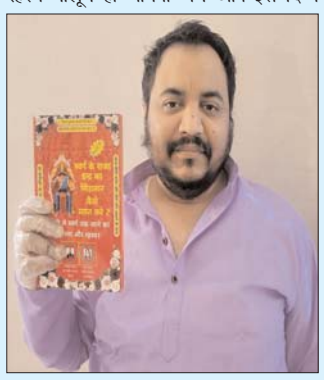

पूरी निष्पक्षता से सम्पन्न कराएं निर्वाचन कार्यः मुख्य कार्यपालन अधिकारी

रीवा। वू. कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में सेक्टर आफीसरों का दो पालियों में चुनाव प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत डॉ सौरभ सोनवणे ने कहा कि सेक्टर आफीसर निर्वाचन की महत्वपूर्ण कडी है। अपने सेक्टर

सेक्टर आफीसर निर्वाचन की हर जानकारी रखें: डॉ सोनवणे

में उसे पूरे वैधानिक अधिकार प्रदान किए जा रहे हैं। सेक्टर के सभी मतदान केन्द्रों में सुचारू मतदान की व्यवस्था में समन्वय की पूरी जिम्मेदारी सेक्टर आफीसर की होगी। सभी सेक्टर आफीसर पूरी निष्पक्षता से निर्वाचन कार्य सम्पन्न कराएं। उन्होंने कहा कि सेक्टर आफीसर मतदान को सुचारू सम्पन्न कराने के साथ मतदान केन्द्र की व्यवस्था के लिए भी पूरी तरह से जिम्मेदार होगा। निर्वाचन आयोग ने विधान सभा चुनाव को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाने के लिए कई

नये प्रावधान बनाए हैं। इनका पूरी तरह से पालन करें। समाचार पत्रों में पेड न्यूज पर नियंत्रण के लिए कडे प्रावधान बनाए गए हैं। उन्होंने सम्पत्ति विरूपण अधिनियम, कोलाहल नियंत्रण अधिनियम सहित निर्वाचन से जुडे विभिन्न कानूनों की जानकारी देते हुए इनका कठोरता से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मतदाता की पहचान सुनिश्चित होने पर ही उसे मत देने का अधिकार मिलेगा। निर्वाचन आयोग के पहचान पत्र सहित निर्धारित 16 में से कोई एक अभिलेख होने पर ही मतदान का अवसर मिलेगा।

सेक्टर अधिकारियों को प्रशिक्षण देते हुए नोडल अधिकारी प्रशिक्षण डॉ अमरजीत सिंह ने कहा कि सेक्टर आफीसर मतदान की प्रक्रिया, इलेक्ट्रानिक मशीन के संचालन, चुनाव प्रबंधन, निर्वाचन की आदर्श आचरण संहिता तथा निर्वाचन आयोग के निर्देशों का बारीकी से गहन अध्ययन करें। चुनाव से जुडी हर तरह की जानकारी होने पर ही सेक्टर आफीसर अपना कार्य कर सकेंगे। मतदान सामग्री के वितरण, मतदान की तैयारी, मतदान की प्रक्रिया तथा मशीनों की सीलिंग पर विशेष ध्यान दें। मतदान माकपोल के बाद ही शुरू होगा। इसका प्रमाण पत्र मतदान शुरू होने के तत्काल बाद सेक्टर आफीसर को निर्वाचन कार्यालय को प्रस्तुत करना है। ग्राम स्तरीय कर्मचारियों से लेकर एसडीएम, तहसीलदार तथा निर्वाचन से जुडी अधिकारियों के मोबाईल नम्बर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। अपने सेक्टर के अधिकारियों से नियमित सम्पर्क रखें। सेक्टर अधिकारियों को मतदान दिवस के कार्य, कानून और व्यवस्था बनाए रखने, मतपत्र लेखा तैयार करने, पीठासीन की डायरी तथा 16 बिन्दुओं क प्रपत्र को भरने की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में स्वेप प्लान, मतदाता सूची, अमिट निशान लगाने, टेण्डर बोट, चेलेन्ज बोट, प्राक्सी बोट का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान सेक्टर आफीसरों को ईव्हीएम मशीन का हैण्डस ऑन प्रशिक्षण भी दिया गया।

जब कोई दिलेर आएगा तब शराब और गाय, पशु-पक्षी की हत्या बंद हो जाएगी

राजनीतिक पार्टियों में शराबी, मांसाहारी, अपराधियों, भ्रष्टाचारियों को न रखा जाए, यदि कानून बन जाए...

उज्जैन (म.प्र.)देश, समाज परिवार के हित में, पूरी व्यवस्था में ही स्थाई सुधार ला देने के अचूक और सरल उपाय बताने वाले, जिन्हें कोई भी व्यक्ति, पार्टी या दल रुपया-पैसा, पद-प्रतिष्ठा आदि का लालच देकर कभी नहीं खरीद सकता, डंके की चोट पर बिना डरे स्पष्ट रूप से सत्य बात कहने वाले, महान समाज सुधारक, पूरे समरथ सन्त सतगुरु, उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज ने 15 अक्टूबर 2022 प्रातः पूर्णिया (बिहार) में दिए व अधिकृत यूट्यूब चैनल जयगुरुदेवयूकेएम पर लाइव प्रसारित संदेश में बताया कि यदि कानून बन जाए कि गौ हत्या नहीं होगी, किसी भी जानवर की हत्या कोई नहीं करेगा तब तो यह अभी बंद हो सकता है। लेकिन आपको यह (करने की) पावर नहीं है। लेकिन अगर मांस खाना लोग बंद कर दें तो कोई हत्या होगी। कोई जानवर काटा जाएगा। कोई मुर्गा, भैसा, बकरा काटा जाएगा नहीं काटा जाएगा। इसलिए यह अभियान तो आप चलाई ही सकते हो। नहीं कुछ है तो आपके घर में ही कोई मांसाहारी हो, उसी को समझा कर सही कर लो। जाति-बिरादरी में, पड़ोसी, मिलने-जुलने वाला है, उसी को सही करो तो आपका शरीर अच्छे काम में लगेगा तो। मनुष्य ही परोपकार, दूसरों की मदद, दूसरों के लिए कुछ कर सकता है बाकी जानवर तो आप-आप ही चरें, वह तो अपने लिए ही करते हैं। तो यह एक परोपकार का काम भी करो कि आप लोगों को शाकाहारी, नशा मुक्त बनाओ।

कहीं विधायकी ही न खत्म हो जाए-महाराज जी ने 11 अगस्त 2020 प्रातः उज्जैन आश्रम में बताया कि हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि जितने भी पक्ष-विपक्ष के नेता, जो कहलाते हो, आपको मान्यता लोगों ने जो दे रखा है, आपका यह फर्ज बनता है कि आप परिस्थितियों को समझो, गहन अध्ययन करो। अब यह कोई शाकाहारी नशा मुक्त ही कर सकता है। शराब पीने वाला कभी नहीं कर सकता है। नशे का सेवन करने वाला, कहां से इन सब चीजों को सोच पाएगा? मैंने देखा राजस्थान में शाकाहारी लोग ज्यादा है और शाकाहारी को पसंद करते हैं। शाकाहारी एमएलए, एमपी भी आप लोग हो। आप लोग अपना विचार इन नेताओं के सामने रखो। अगर कोई मांसाहारी शराबी है तो भी उनके सामने विचार रखो। अब बहुत हो गया, अब ज्यादा दिन इसको मत खींचो, अब निर्णय ले लो, फायदे का काम कर लो। कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है कि जो इतना मेहनत, दौड़-धूप किये कि चलो भाई हम सेवा करेंगे, एमएलए बन जाएंगे, वह

एमएलएशिप, विधायकी ही खत्म हो जाए, सेवा करने का अवसर ही चला जाए। इसलिए बनाए रखो, आपका समय जब तक है, बनाये रखो। और वहां से निकलने के बाद, सजा काटने के बाद, आप जनता की सेवा में लग जाओ। बंधन क्या होता है? सजा ही एक तरह की होती है। जेल में बंद होना बड़ी सजा होती है। और किसी को दो घंटे कही बैठा देना, वह भी सजा होती है। सजा काट के जब निकलो तो सेवा में लग जाओ। दौड़-धूप करके जो कमी रह गई, उसको जल्दी से जल्दी पूरा कर लो।

राजनीतिक पार्टियों में अपराधी भ्रष्टाचारियों को न रखा जाए-महाराज जी ने 1 नवंबर 2020 को उज्जैन आश्रम में बताया कि भारत ही नहीं, विश्व के जितने भी राजनीतिज्ञ हैं, अगर राजनीतिक से अपराध और अपराधियों को, व्यापारीकरण नहीं हटाएंगे तो एक दिन जनता ही इनसे हाथ जोड़ लेगी, हटा देगी, प्रार्थना करेगी कि अब आप लोग संयास ले लीजिए, अब हमें आपकी जरूरत नहीं है। इसीलिए विश्व के सभी नेताओं से मेरी गुजारिश, अपील, प्रार्थना है कि आप लोग अपराधी प्रवत्ति छोड़ दीजिए। अपराधियों को शह देना छोड़ दीजिए। अपनी-अपनी पार्टियों में अपराधियों को, भ्रष्टाचारियों को न रखें। अच्छे लोगों को रखिए। अच्छे लोगों की कमी नहीं है। अच्छे लोग जहां रहेंगे, हर जगह अच्छाई का काम करेंगे। शाकाहारी, सदाचारी, नशा मुक्त, चरित्रवान लोग अच्छा और स्थाई काम करेंगे। और अपराधी प्रवृत्ति वाले, खराब खान-पान, गलत चाल-चलन वाले लोग किसी भी व्यक्ति, पार्टी की तरक्की में ब्रेकर बन जाएंगे। जैसे रोड पर ब्रेकर होता है तो गाड़ियों को रुकना ही पड़ता है। ऐसे ब्रेकर ये बन जाएंगे। ऐसे तरक्की नहीं हो सकती है। भारत देश में गलत लोगों से न तो बरकत मिल सकती है, न देश की, न समाज की, न किसी पार्टी की तरक्की हो सकती है और न जनता की भलाई हो सकती है। मैं आदेश नहीं दे सकता हूं, निवेदन कर सकता हूं। आप सभी लोग अपराध से और अपराधियों से दूर हो जाइए और शाकाहारी, नशा मुक्त, चरित्रवान बन जाइए। अब यह तीन गुण प्रमुख रूप से आपके अंदर आ गए तो आप राजनीति, व्यापार, खेती, कोई भी रिसर्च करिए, उसके साथ हमारे गुरु महाराज की दया आपके साथ रहेगी और आप तरक्की कर जाओगे। करके देख लो।

जब कोई दिलेर आएगा तब शराब और गाय, पशु-पक्षी की हत्या बंद हो जाएगी-महाराज जी ने 2 अगस्त 2020 सायं उज्जैन आश्रम में बताया कि खबर आई कि पंजाब में 80-85 लोग जहरीली शराब पीने से मर गए। अब आप सोचो जहरीली शराब किसने पिलाई। दुकान किसने खुलवाया। जो हुकूमत में हैं। अब दूसरी पार्टी के लोग कह रहे हैं कि शराब पीने से मरने वालों को 25-25 लाख मुआवजा दिया जाए। अब यह कौन देगा। यह कोई अपनी तनख्वाह से देंगे। सरकारी कोष से देंगे। पैसा किसका जाएगा। जनता का जाएगा। जरूरत क्या है। एक लाइन का कानून बना दो। प्रदेश में, देश में आज से शराबबंदी लागू की जा रही है। कुछ (विवाद आदि) नहीं होगा। न शराब पीकर के एक्सीडेंट में लोग गिरेंगे, न आपको एंबुलेंस भेज करके उनको उठा करके लाना पड़ेगा, न रात को डॉक्टर को जगना पड़ेगा, न नर्स को पट्टी मरम्मत करना पड़ेगा। शराब की वजह से होने वाला सब लड़ाई-झगड़ा और अपराध बंद हो जाएगा। तो ऐसा क्यों नहीं करते हैं (ये सोच बन गयी है कि) जो यह करें, सो मैं करूं। जो पहले लोग करते आये, वही मैं करूं। यह एक बोतल शराब पीते हैं तो हम दो बोतल क्यों नहीं पिए। तो शराब के नशे में गद्दी पर बैठ करके कोई शराबबंदी कर सकता है कभी नहीं। गौ का मांस खाने वाले जब गद्दी पर बैठ कर कानून बनाने वाले बनेंगे तो क्या वो गौ हत्या कभी बंद कर सकते हैं? कभी भी नहीं। वह तो समय आएगा, जब नियम-कानून में परिवर्तन होगा। जब कोई दिलेर आएगा, दिल से चाहेगा और हिम्मत जब जुटायेगा तब शराब, गौ हत्या, पशु-पक्षी की भी हत्या बंद हो जाएगी। आये दिन मांस के चक्कर में कि यह गौ, भैसा, बकरे का है, मारपीट कोई नहीं करेगा। आए दिन यह घटना है। अभी पेपर उठा करके देखो। अभी कल भी मारपीट हुई है। कहीं न कहीं रोज होती है। कभी-कभी कोई घटना प्रकाश में आ जाती है, तो उसको यह (न्यू? में) दे देते हैं। इन सब चीजों की जरूरत ही खत्म हो जाएगी। तो कांटा ही क्यों नहीं निकाल देते हो (घाव को) पकने, फूटने क्यों देते हो लेकिन आप तो, जो यह करे सो मैं करूं, तो प्रजातंत्र दूषित होगा कि नहीं होगा। प्रजातंत्र का गला घुटेगा या नहीं प्रजातंत्र का नाश होगा कि नहीं होगा। समय आएगा, संविधान में परिवर्तन होगा, अच्छे शाकाहारी, सदाचारी, नशा मुक्ति व्यक्ति जब आएंगे तब इस तरह से कानून बनाने वालों को भगना नहीं पड़ेगा।

खुशाली कुमार, तुषार खन्ना, मिलिंद सोमन और एहान भट्ट की फिल्म

स्टारफिश का फर्स्ट लुक हुआ रिलीज़

जब से फिल्म स्टारफिश की घोषणा हुई है तब से प्रशंसको को फिल्म के बारे जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता है, इस बात को ध्यान में रखते हुए मेकर्स ने खुशाली के लुक के साथ साथ फिल्म के स्टारकास्ट के लुक को भी रिवील किया है। इस लुक रिवील ने फैंस के उत्साह को और बढ़ा दिया है। खुशाली इस फिल्म में तारा की भूमिका निभा रही हैं। वह दिल से एक स्कूबा गोताखोर है लेकिन दिल से एक रिबेल है। मिलिंद सोमन ने अर्लो का किरदार निभाया है जो स्पिरिचुअल गुरु हैं। स्टारफिश के साथ अपनी शुरुआत करने वाले तुषार खन्ना ने अमन की भूमिका निभा रहे है जो मिस्टर राइटियस भी है, और इहान भट्ट ने नील की भूमिका निभाई है जो स्वतंत्र विचारों वाले है। हालांकि सभी लुक्स को नजरअंदाज करना मुश्किल है, लेकिन यह खुशाली का आश्चर्यजनक परिवर्तन है जिसने प्रशंसकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। अखिलेश जयसवाल द्वारा निर्देशित, रोमांचक ड्रामा अंडरवाटर वर्ल्ड पर आधारित है। स्टारफिश 24 नवंबर, 2023 को रिलीज़ होगी।

भाजपा सरकार के पास विकास, कांग्रेस के पास विकास की कोई नीति नहीं : हुक्म सिंह राजपुरोहित

भाजपा प्रत्याशी के नाम ऐलान होते ही कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल

पुष्पांजलि टुडे संवाददाता नरेश कुमार सिरवी पाली राजस्थान पाली राजस्थान। । सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी ने जोराराम कुमावत राम कुमावत को प्रत्याशी बनाया । खोड भाजपा मंडल अध्यक्ष हुक्म सिंह खरोखडा ने अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत मंडल के ग्रामीण अंचलों में पहुंचकर 25 नवंबर को होने जा चुनावी महासमर में भाजपा भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने के लिए प्रेरित किया राजपुरोहित ने बताया कि सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र से जोरा राम कुमावत को प्रत्याशी घोषित होने के बाद कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर उठी और जीत की अग्रिम बधाई दी। विधानसभा क्षेत्र सहित पाली जिले में भारतीय जनता पार्टी चुनाव चिन्ह कमल के फूल खिलाने के लिए सर्व समाज के मतदाताओं के बीच पहुंचकर जनसंपर्क से समर्थन मांगा जा रहा है। मंडल अध्यक्ष अपने निर्धारित जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत मतदाताओं को मतदान करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। भाजपा मंडल अध्यक्ष मंडल के विभिन्न मोर्सन के पदाधिकारी विभिन्न मोर्चा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशी कुमावत को भारी से भारी मतों से विजय बनाने के लिए रणनीति बनाई जा रही हैं।

कलेक्टर के आदेशानुसार उप संचालक कृषि ने बीज प्रदाय कंपनियों पर बीज एक्ट के तहत् प्रभावी कार्यवाही की

दैनिक पुष्पांजली टुडे

दो फर्मों के रिटेलर लाइसेंस निलंबित करें थोक आईडी को निरस्त कराने की कार्यवाही प्रचलितसभी किसान भाई फसलों का बीज पंजीकृत विक्रेता से ही क्रय करें

भिण्ड । जिले में किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज/उर्वरक उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सघन अभियान प्रारंभ किया है इसके तहत् जिले में सभी बीज प्रदाय कंपनियों से जिले में प्रदाय बीज की फसल वार/किस्म वार जानकारी प्रदाय हेतु उप संचालक कृषि ने निर्देशित किया था। जिससे जिले में अमानक या नकली बीज विक्रय को पूर्णतः प्रतिबंधित किया जा सके।कलेक्टर संजीव श्रीवास्तव के आदेशानुसार उप संचालक कृषि श्री राम सुजान शर्मा ने बीज प्रदाय कंपनियों पर बीज एक्ट के तहत् प्रभावी कार्यवाही करते हुऐ कार्तिक सीड्स, पदमावत सीड्स, मंगलम सीड्स को जिले की परिधि सीमा में विक्रय से प्रतिबंधित किया है साथ ही शिव शक्ति बीज भण्डार ग्वालियर रोड भिण्ड को बिना प्राधिकृत पत्र के उक्त कंपनियों के बीज विक्रय के सम्बंध में नोटिस जारी किया है। सभी बीज निरीक्षकों को निर्देशित किया है की उक्त कंपनियों के सभी किस्म के बीजों का स्टॉक डीलर वार लेकर सुपुर्द नामा बनाकर तत्काल कार्यालय में प्रस्तुत करें। किसी भी स्तिथि में लापरवाही क्षम्य नहीं होगी।इस अभियान के तहत् उर्वरक विक्रेता मेसर्स हरीश चंद जैन अटेर रोड, पंडित राम दयाल एंड संस पुरानी गल्ला मंडी भिण्ड को उर्वरक रैक प्वाइंट से प्राप्ति की भ्रामक जानकारी देने तथा आदेश की अवहेलना के संदर्भ में उर्वरक निरीक्षक भिण्ड की अनुशंसा पर दोनों फर्मों के रिटेलर लाइसेंस निलंबित किए हैं तथा थोक आईडी को निरस्त कराने की कार्यवाही की जा रही है।किसानों से अपील की है की सभी किसान भाई फसलों का बीज पंजीकृत विक्रेता से ही बीज क्रय करें और इसका बिल भी अवश्य प्राप्त करें किसी भी अनियमितता तथा संदिग्ध बीज या अन्य आदान की स्थिति में ब्लाक ऑफिसर कृषि तथा उप संचालक कृषि को तत्काल सुचित करें जिससे सम्बन्धित के विरुद्ध क?ी कार्यवाही की जा सके।

खेती के विवाद को लेकर बम्हरौली गांव में चली गोली एक घायल गंभीर अवस्था में ग्वालियर रेफर

दैनिक पुष्पाजलि टुडे

गोहद।खेती के विवाद को लेकर बम्हरोली गांव में गोली लगने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे ग्वालियर रेफर कर दिया है जानकारी के अनुसार फरियादी सचिन यादव पुत्र राजबहादुर सिंह यादव उम्र 22 साल निवासी बम्हरौली ने पुलिस को बताया कि आरोपीगढ़ मनोज यादव, धीरज

यादव,भूपेंद्र यादव,विष्णु यादव निवासी बम्हरोली थाना मौ द्वारा खेती के विवाद को लेकर आरोपियों ने फायरिंग कर दी जिससे धर्मवीर पुत्र नारायण सिंह यादव के हाथ में गोली लगी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे तुरंत मौ अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टर ने गंभीर स्थिति देखते हुए ग्वालियर रेफर कर दिया घटना शनिवार की सुबह लगभग 7-30 बजे की बताई जा रही है गोली चलने की सूचना मिलते ही मौ थाना पुलिस एवं एसडीओपी सौरव कुमार सहित वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में बड़ी मात्रा में पुलिस बल मौके पर पहुंचा मौ पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है

किसानों का हक डकारने वाले को काग्रेस ने बनाया प्रत्याशी

गोहद ,गोहद बिधानसभा से काग्रेस पार्टी द्वारा काफी मशक्कत के बाद एक ऐसे व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया है जिसने अपने ही छेत्र के किसानों का प्राकृतिक आपदा केफलस्वरूप वितरित की जाने वाली मुआवजा राशि पर डाका डाल दिया इतना ही किसान रंजीत सिंह सिख के द्वारा उधारी वापस मांगने पर जेल भेजने की धमकी तक दे डाली उक्त बयान गोहद बिधानसभा से भाजपा प्रत्याशी लालसिह आर्य ने दिया गोहद बिधानसभा से भाजपा प्रत्याशी लालसिह आर्य ने काग्रेश पर जमकर निशाना साधा उन्होंने कहा कि एक तरफ काग्रेश प्रदेश में बेदाग प्रषासन देने का बाद कर जनता को गुमराह ककर रही है काग्रेस का गोहद बिधानसभा का प्रत्याशी काग्रेस की चाल चरित्र का परिचायक है किसान को अन्नदाता कहा जाता है और किसान उपज की पैदावार कितनी कठिनाई के साथ करता है यह किसी से छिपा नही है इसके बाद अगर ईश्वर रूठ जाये तो किसान आत्महत्या तक कदम तक उठा लेता है किसानों को प्राकृतिक आपदा में मुआवजा राशि पहले ऊँट के मुंह मे जीरा के समान प्रदान की जाती लेकिन भाजपा सरकार ने आरबीसी एक्ट में बदलाव कर मुआवजा राशि मे बृद्धि कर किसानों की मदद की लेकिन गोहद बिधानसभा में काग्रेस प्रत्याशी केशव देशाई ने आपदा में अवसर निकालकर किसानों को प्रदान की जाने वाली मुआवजा राशि को अपने बेक खाता में जारी करा दी भाजपा प्रत्याशी ने बताया कि काग्रेस प्रत्याशी ने किसान रंजीत सिंह से 10लाख रुपये की राशि उधर ली और वापस चेक के माध्यम से की लेकिन वो चेक से भुगतान प्राप्त नही हुआ जब उस सीधे साड़े किसान ने राशि की मांग की तो प्रकरण दर्ज कराकर जेल भेजने की धमकी दे डाली भाजपा प्रत्याशी लालसिह आर्य ने गोहद बिधानसभा में माहौल पूरी तरह भाजपा के पक्ष में है ही गोहद की जनता सीधी ओर खरी खरी कहने वाली है और वो चल फरेब करने वालो को मुँहतोड़ जबाब देकर भाजपा को रिकार्ड मतों से विजयी बनायेगयी

पांच वर्षो से लगातार निकाल रहे है चुनरी यात्रा

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। इन दिनों शहर में नवरात्री पर्व की धूम है जहाँ लोग माँ कि आराधना पूजापाठ और व्रत रख कर रहे है वही शहर के सुभाष कॉलोनी सिविल वार्ड नंबर 6 के निवासियों के द्वारा माता की चुनरी यात्रा हर वर्ष शिव शक्ति चौराहे से बड़ी देवी मैया के मंदिर तक निकाली जाती है आपको बता दे यह चुनरी यात्रा पांच वर्षों से लगातार निकाली जा रही है और कॉलोनी वासियों के द्वारा माता को चुनरी चढ़ाई जाती है। इस चुनरी यात्रा में ब?ी संख्या में माताएं बहने एवं भक्तजनों कि उपस्थिति रहती है इस अवसर पर वार्ड वासियों में माता के भक्त निक्की सेन अध्यक्ष, पंकज सेन,धर्मेंद्र सेन, शारदा सेन,शिवनारायण पप्पू सेन,विजय दुबे,बलराम,राहुल, उमेश,पवन, सुरेश, विक्की, अजय,अमित राठौर,बाबू,दुर्गेश,संजय चौहान, कमलेश ठाकुर,राकेश ठाकुर,अनिकेत, कैलाश,सूरज, धर्मेश, सोनू,सचिन, आशा रानी,सुरभि संध्या द्रोपती सुमन ममता रेखा मोहिनी अवध रानी सुरभि,रानी, सविता विश्वकर्मा,बबीता नामदेव, बबीता नामदेव, कमला रैकवार,करिश्मा पटेल,दीप्ति पटेल, बबीता, खुशबू नामदेव,बबली चाची, शीला सेन, सहित ब?ी संख्या में भक्तजन चुनरी यात्रा में शामिल हुए।

भिण्ड विधानसभा पूर्व विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह, मेहगांव विधानसभा से पूर्व विधायक राकेश शुक्ला का टिकट हुआ फाइनल

पूर्व विधायक कुशवाह एवं पूर्व विधायक शुक्ला के निवास स्थान पर पहुंच कर कार्यकर्ताओं ने पुष्प हार पहनकर किया ऐतिहासिक स्वागतपूर्व विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह एवं पूर्व विधायक राकेश शुक्ला ने कार्यकर्ताओं को चुनाव अभियान में जुड़ जाने का आह्वान करते हुए कहा कि भाजपा की होगी ऐतिहासिक प्रचंड जीत भारतीय जनता पार्टी केंद्रीय नेतृत्व ने चुनाव केंद्रीय समिति की बैठक में मिशन 2023 के विधानसभा चुनाव के लिए भिण्ड विधान विधानसभा क्षेत्र से पूर्व विधायक नरेंद्र सिंह कुशवाह और मेहगांव विधानसभा क्षेत्र से पूर्व विधायक राकेश शुक्ला का टिकट दिया है। जैसे ही टिकट फाइनल की सूची आते ही पूर्व विधायक कुशवाह एवं पूर्व विधायक शुक्ला के निवास स्थान पर हजारों की तादाद में उनके समर्थक और कार्यकर्ता सर्व समाज के लोग पहुंचकर बधाई देते हुए उनके ऐतिहासिक स्वागत किया। दोनों विधानसभा में समर्थन एवं पार्टी कार्यकर्ताओं ने पटाखे चला कर एवं मिठाई का वितरण करते हुए खुशी का इंतजार किया और उन्होंने सभी कार्यकर्ता एवं समर्थकों का अभिवादन स्वीकार करते हुए चुनाव अभियान में जुड़ जाने का आवाहन किया।

मातृशक्ति के प्रति युवाओं का श्रद्धा भाव राष्ट्र के लिए शुभ संकेत : भारत सिंह कुशवाह

बिल्हैटी के युवाओं ने मां कात्यायनी की विशेष पूजा कर लिया समाज के वरिष्ठ जनों का आशीर्वाद

प्रमोद कुशवाहा की अगुवाई में युवाओं ने ली कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण की शपथ

ग्वालियरसनातन संस्कृति में मातृशक्ति को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है । नवदुर्गा पूजन इसका प्रमाण है । मुरार विकास खण्ड के ग्राम बिल्हैटी के युवाओं के बीच इस आशय के उद्गार प्रदेश के मंत्री भारत सिंह कशवाहा ने व्यक्त किए । यहां युवा कुशवाहा टीम के संयोजक प्रमोद कुशवाहा के साथ आए युवाओं ने मां कात्यायनी देवी की विशेष पूजा अर्चना की । मंत्री भारत सिंह ने युवाओं के बीच कहा कि जिस समाज में मातृशक्ति का सम्मान होगा, वह समाज उत्तरोत्तर प्रगति करेगा । पूजा के बीच बिल्हैटी के युवाओं ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ चरणबद्ध मुहिम चलाने का संकल्प लिया । परस्पर समी ने इसमें रचनात्मक सहयोग का भरोसा भी दिलाया । बिल्हैटी कुशवाहा युवा मंडल के संकल्पित युवाओं में संयोजक प्रमोद कुशवाहा के साथ दिलीप कुशवाहा, बृजेश, संजय, रामनरेश, लालू, रायसिंह, कल्लू, अटल बिहारी कुशवाहा, रिंकू, लालसिंह, बालमुकुंद, लोकेन्द्रसिंह, शंकर और नीरज कुशवाहा प्रमुख हैं । भारत सिंह कुशवाहा ने प्रमोद कुशवाहा के प्रयासों की मुक्तकंठ प्रशंसा की ।

उम्मीदवार को नामांकन पत्र के साथ जमा करना होगा शपथ पत्र

प्रत्येक उम्मीदवार को देना होगा अपराधिक रिकार्ड का विवरणरीवा। रीवा तथा मऊगंज जिले के सभी 8 विधानसभा क्षेत्रो के लिए चुनाव कि अधिसूचना 21 अक्टूबर को जारी की जाएगी। इसी दिन से नामांकन पत्र दखिल करने प्रक्रिया आरंभ होगी। कलेक्ट्रेट कार्यालय रीवा में विधानसभा क्षेत्र सिरमौर, सेमरिया, त्योंथर, मनगवां, रीवा तथा गुढ विधानसभा क्षेत्रो के लिए नामांकन पत्र दाखिल किये जायेगे। कलेक्ट्रेट कार्यालय मऊगंज मं विधानसभा क्षेत्र देवतालाब तथा मऊगंज के आवेदन पत्र दाखिल किए जाएंगे। आवेदन पत्रों को जमा करने के लिए रिटर्निंग आफीसर, सहायक रिटर्निंग आफीसर तथा उनके सहायक कर्मचारी तैनात कर दिए गए हैं। नामांकन पत्र के साथ प्रत्येक उम्मीदवार को अपराधिक रिकार्ड का विवरण भी देना होगा। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि सभी उम्मीदवार नामांकन पत्र दाखिल करते समय निर्वाचन आयोग के निर्देशों का पालन करें। नामांकन पत्र के साथ उम्मीदवार को निर्धारित प्रपत्र 26 में आपराधिक प्रकरण के संबंध में शपथ पत्र देना होगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि माननीय सुप्रीमकोर्ट के आदेश के अनुसार उम्मीदवार को अपने पूर्व के प्रचलित आपराधिक प्रकरण एवं दोषसिद्ध प्रकरण के संबंध में घोषणा पत्र देना होगा। उम्मीदवार निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रारूप में सभी विवरण दर्ज करके नामांकन पत्र के साथ प्रस्तुत करेंगे। यदि उम्मीदवार किसी राजनैतिक दल कि ओर से चुनाव लड़ रहा है तो उसे आपराधिक प्रकरण के संबंध में उस राजनैतिक दल को भी सूचना देनी होगी। राजनैतिक दल उम्मीदवार के लंबित आपराधिक प्रकरण कि जानकारी दल की वेबसाइट पर दिखाएंगे। साथ ही राजनैतिक दल इस संबंध में एक घोषणा जारी करेंगे जिसे समाचार पत्रो एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में प्रसारित प्रकाशित करना आवश्यक होगा।

जैजैपुर विधानसभा में किसकी सरकार किसके सिर पर सजेगी जीत का ताज अगला विधायक कौन

सक्ती/ जैजैपुर विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 37 में इस बार

चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है सभी पार्टियों ने अपनी प्रत्याशियों के नाम घोषित कर दिया है ।बसपा से केशव

प्रसाद चंद्रा भाजपा से कृष्णकांत चंद्रा कांग्रेस से बालेश्वर साहू आम आदमी पार्टी से दुर्गालाल केवट पर भरोसा जताया है प्रत्याशियों के नाम की घोषणा के बाद सभी पार्टियों के प्रत्याशी और कार्यकर्ता अपनी अपनी ताल ठोकते दिखाई दे रहे है सभी पार्टी के प्रत्याशियों द्वारा सघन जन संपर्क कर लोगों को अपने विश्वास में लेने का प्रयास शुरू हो चुका है।अब देखना ये है कि 2023 विधानसभा चुनाव में किसके सिर पर सजेगी ताज।बात करे पिछले 2013 और 2018 की चुनाव की तो जैजैपुर क्षेत्र से बसपा विधायक केशव प्रसाद चंद्रा ने भारी मतों से विजयी होकर आए थे पार्टी हाईकमान ने इस बार भी केशव प्रसाद चंद्रा पर विश्वास जताया है और पार्टी के टिकट दिया है जहां इस बार भी अगर विजयी होने पर जीत की हैट्रिक हो जायेगा ।जहां उनकी ताकत की बात करे तो दो बार से क्षेत्र के विधायक होने के कारण उनका जनता से जुड़ाव है लगातार जनसंपर्क कर लोगों की समस्याओं का निराकरण करते आए है और विकास की बहुत कार्य हुआ है साथ ही उनका सभी समाज में पकड़ अच्छा है ।

वही अब बात करते है भाजपा की तो इस बार पार्टी हाईकमान ने कृष्णकांत चंद्रा पर अपना विश्वास जताया है सक्ती जिला गठन के बाद पार्टी ने उन्हें सक्ती जिला के जिलाध्यक्ष बनाया था इस बार जैजैपुर से विधायक चेहरे के रूप में उभरकर सामने आए है चंद्रा समाज से होने के कारण उनके जितने के आसार ज्यादा नजर आ रहे

है क्योंकि यहां चंद्रा समाज का अच्छा वोट बैंक है और साथ ही अन्य समाज में भी उनकी पकड़ मजबूत है । वही कांग्रेस से बालेश्वर साहू पर अपना दांव लगाया है वर्तमान में सक्ती जिला के युवा कांग्रेस के जिलाध्यक्ष युवा प्रत्याशी नया चेहरा है लेकिन युवाओं में उनका अलग ही क्रेज देखने को मिल रहा है भूपेश बघेल जी की किसान हितैसी किसानों की सरकार का लाभ मिलेगा । जनता से इनका जुड़ाव बहुत अच्छा होने के कारण लोगों की समस्याओं को प्रमुखता से शीर्ष नेतृत्व के सामने रखते है जिसके कारण क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है विशेष कर युवा वर्ग में साथ ही बालेश्वर साहू साहू समाज के जिला अध्यक्ष है ये भी चुनाव में मिल का पत्थर साबित होगा । इस बार अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ने भी अपना

उम्मीदवार दुर्गा लाल केवट को चुनावी समर में उतारा है ये भी अपने केवट समाज के अध्यक्ष है और लोगों को सामाजिक सत्ता परिवर्तन के लिए लगातार जनसंपर्क कर रहे है दिल्ली और पंजाब की तर्ज पर ये बड़ा उलटफेर कर सकते है। जैजैपुर विधानसभा क्षेत्र में लगभग 2 लाख 50 हजार वोटर है जहां जातिगत समीकरण इस बार बहुत अहम भूमिका निभाने वाली है अब देखना ये है की जनता कौन से उम्मीदवार पर अपना भरोसा जताएगे किस के सिर पर ताज सजेगा ।

एक नजर पिछले विधानसभा चुनाव पर डालते है जिसमे बसपा से केशव प्रसाद चंद्रा को 64,774 वोट मिले (विजयी हुए)
भाजपा से कैलाश साहू को 43, 084 वोट (हारे)
कांग्रेस से अनिल चन्द्रा को 38,594 वोट (हारे)

शोषित - पीड़ित समाज की सेवा के लिए राजनीतिक दल का आश्रय जरूरी नहीं

-मिश्री की डली की मानिंद होता है सुसंगठित समाज, दल के दल खिंचे चले आते हैं चींटी की तरह -कुंवर संतोष सिंह

-माता के दर्शन से होता है शरीर में दैवीय शक्ति का संचार-फ़ौजी सतेन्द्र

-पूरी शीतला माता टीम को वैष्णो देवी दर्शन यात्रा पर ले जाने का एलान

- भिन्न धर्मावलंबियों ने भी माना सातउ को सिद्ध देवी तीर्थ !

-सुप्रबंधन के लिए पुलिस तथा प्रशासन की सराहना !

ग्वालियर।संतों के मार्गदर्शन में पीड़ित - शोषित समाज की सेवा ही मेरा संकल्प है । इसके लिए

किसी राजनीतिक दल का आश्रय जरूरी नहीं । शिक्षित - सुसंगठित समाज मिश्री की डली की तरह होता है , जिस समाज में मिश्री सी मिठास होगी, उस ओर सियासी पार्टियां चींटी की तरह खिंचती चली आएंगी । याद रखिए समाज में मिठास केवल निःस्वार्थ सेवा से ही संभव है । यह प्रेरक उद्गार राजधानी दिल्ली के सुप्रसिद्ध उद्यमी और युवा समाजसेवी कुंवर संतोष सिंह के हैं जिन्हें उन्होंने नवदुर्गा शक्ति पर्व के दौरान सातउ में शीतला माता टीम के बीच व्यक्त किए । यहीं पर उन्होंने शीतला माता टीम के स्वयंसेवकों को ÷वैष्णो देवी मंदिर यात्रा÷ पर ले जाने का भी एलान किया । उन्होंने कहा कि इस ÷तीर्थ यात्रा÷ पूरा खर्च वह स्वयं उठाएंगे । बताना मुनासिब होगा कि नवरात्रि शक्ति पर्व पर शीतला माता टीम , फ़ौजी सतेन्द्र सिंह घुरैया के संयोजन में दर्शनार्थियों के लिए शीतल पेय जल सेवा करती है । इस बार शीतला माता टीम ने भव्य पंडाल लगाकर उसमें माता के भक्तों के लिए फलाहार और दर्शनार्थियों के लिए प्रसादी एवं पेयजल की व्यवस्था की है । खास बात यह है कि इस पंडाल

में किसी भी राजनीतिक पार्टी को , निशान के साथ प्रवेश और चर्चा पर बंदिश है । संयोजक फ़ौजी सतेन्द्र सिंह घुरैया का कहना है कि तपस्या, धैर्य, करुणा, स्नेह ,शौर्य , समझ, विश्वास और विजय ; यह सबकुछ हमें मां आदिशक्ति जगदम्बा में दिखाई देता है। इसे ध्यान में रखकर यदि हम देवी-दर्शन करते हैं तो ये सारे गुण हम में संचित होने लगते हैं । इस दैवीय अनुभूति को विज्ञान की कसौटी पर कसना मुमकिन नहीं । शीतला माता टीम के पंडाल में भक्त जनों की सेवा में जुटे लोगों में उपसंयोजक इंजीनियर सुरेन्द्र सिंह, महासचिव रामनिवास महाना, सूरजभान सिंह गुनियां चाचा, रघुराज सिंह, ऊदल सिंह, जीतेन्द्र सिंह , जसवंत सिंह बिजौल, किशनसिंह प्रमुख हैं।

अलौकिक आध्यात्मिक वातावरण-दिल्ली के मशहूर आर्किटेक्ट सरदार कुलदीप सिंह ने शीतला माता मंदिर की दर्शन व्यवस्था और वहां के अलौकिक आध्यात्मिक वातावरण को दैवीय अनुभूति कराने वाला माना । इसके लिए उन्होंने मंदिर प्रबंधन, ग्वालियर जिला प्रशासन और खासकर पुलिस प्रशासन की मुक्तकंठ प्रशंसा की । वहीं समाजसेवी धर्मसिंह बिजौल (धारासिंह) ने स्वप्रेरित - सुव्यवस्थित - स्वअनुशासित वातावरण को जगतजननी शीतला माता का प्रभाव माना और कहा कि यदि पैदल चलकर दण्डवत प्रणाम करते हुए भक्त जन माता शीतला का दर्शन करने आते हैं तो यह मान लेने में कोई संशय नहीं कि ग्वालियर का ÷सातउ देवी तीर्थ÷ हैं।

देवी तीर्थ है शीतला माता मंदिर -यहां यह भी बताना जरूरी होगा कि ग्वालियर महानगर से दूर घने वन क्षेत्र में स्थित ग्राम सातउ का शीतला माता मंदिर इस अंचल का सुप्रसिद्ध जागृत ÷देवी तीर्थ÷ है जहां अनेक भक्त जन पूरे मार्ग पर (सड़क के किनारे - किनारे) दण्डवत प्रणाम करते हुए शीतला माता के दर्शन के लिए जाते हैं । ऐसा कहा जाता है कि संकल्प पूर्ति (मनौती पूरी होने) पर भक्त जन ऐसा करते हैं । वैसे देवी मंदिर के मार्ग पर सबकुछ स्व अनुशासित है फिर भी पुलिस की चौकस नज़र बनी रहती है ।

ग्वालियर 15 विधानसभा के कांग्रेस प्रत्याशी सुनील शर्मा के चुनावी कार्यालय का उद्घाटन

आज ग्वालियर 15 विधानसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी बने सुनील शर्मा चुनाव कार्यालय का उद्घाटन ग्वालियर की वहां पर शोभा सिकरवार जिला अध्यक्ष देवेंद्र शर्मा पूर्व मंत्री भगवान सिंह यादव पूर्व सांसद रामसेवक सिंह ने पूजन कर उद्घाटन किया कार्यालय उद्घाटन के अवसर पर आयोजित सभा में सभा को संबोधित करते हुए ग्वालियर की माप और शोभा सिकरवार ने सभी कार्यकर्ताओं से नगर निगम वाले रिकॉर्ड को दोहराने की बात कही और उन्होंने कार्यकर्ताओं से से जूत जाने की बात की कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष देवेंद्र शर्मा ने भी कार्यकर्ताओं से अपील की जिस तरह से हम पिछला चुनाव 33000 से आ रहे थे ठीक डबल 70000से इस बार की हमको भाजपा को हराना है उन्होंने कहा कि भाजपा की जनता के सामने अब पोल खुल गई है जिस तरह से आज सैकड़ो की संख्या में भारतीय जनता पार्टी छोड़कर कार्यकर्ता कांग्रेस में सम्मिलित हो रहे हैं उसे यह सिद्ध होता है कि भाजपा का जहाज डूबने वाला है कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश महासचिव सुनील शर्मा ने कहा कि मैं 35 साल आपकी सेवा की है भाजपा सरकार ने मुझ पर कई बार बदले की भावना से कार्रवाई की मेरा घर बार व्यापार सब कुछ उजाड़ने की कोशिश की गई लेकिन मैं आपके आशीर्वाद से टूटा नहीं बल्कि और मजबूती से खड़ा हुआ लेकिन अब समय आ गया है इस लोकतंत्र विरोधी सरकार को उखाड़ फेंकने का उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने हमारा मत बेचा है उनको आज घर बैठन का समय आ गया है कार्यक्रम को पूर्व मंत्री भगवान सिंह यादव पूर्व सांसद रामसेवक सिंह रश्मि पवार शर्मा मीनू परिहार राजेंद्र सिंह नाती महाराज सिंह पटेल अमर सिंह माहौर सहित कांग्रेस जनों ने संबोधित किया आज इस अवसर पर सैकड़ो भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भाजपा छोड़कर कांग्रेस की सदस्यता ली कांग्रेस की सदस्यता लेने वालों में पूर्व पार्षद संतोष भारती अशोक मिश्रा पुष्पेंद्र सिंह तोमर जीतू कमरिया राजभान सिंह चौहान सत्येंद्र जोशी दीपक त्यागी सौरभ गुप्ता विजय सिंह सिसोदिया अविनाश तोमर चंद्रशेखर झा प्रदीप सिंह चौहान पंकज तिवारी सुजीत तोमर भगवान

ग्वालियर सीट पर प्रद्युम्न के सामने ताल ठोकेंगे सुनील, दिमनी से केंद्रीय मंत्री को चुनौती देंगे रविन्द्र

ग्वालियर. । मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने गुरुवार आधी रात को प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी कर दी। इस सूची में ग्वालियर सीट पर सुनील शर्मा फिर से ऊर्जा मंत्री व भाजपा प्रत्याशी प्रद्युम्न के सामने ताल ठोकेंगे। इसी तरह हाईप्रोफाइल सीट दिमनी में केंद्रीय मंत्री व भाजपा उम्मीदवार नरेंद्र सिंह तोमर को वर्तमान विधायक रविंद्र सिंह चुनौती देंगे। इसके अलावा कांग्रेस ने दतिया व पिछोर का टिकट बदला है और अंबाह सहित भिंड विधानसभा सीट के प्रत्याशी भी घोषित किए हैं।ग्वालियर सीट से कांग्रेस ने एक बार फिर सुनील शर्मा के नाम पर भरोसा जताया है, वे मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के सामने ताल ठोकेंगे। वहीं मुरैना की दिमनी सीट से केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के सामने वर्तमान विधायक रविंद्र तोमर को उम्मीदवार घोषित किया है। मुरैना सीट से जिलाध्यक्ष और वर्तमान विधायक राकेश मावई का टिकट काटकर किसान कांग्रेस के नेता दिनेश गुर्जर को मौका दिया है। मुरैना की सुमावली सीट से एदल सिंह के सामने कुलदीप सिकरवार और सुरक्षित अंबाह सीट से देवेंद्र रामनारायण सखवार को टिकट दिया गया है।भिंड से चौधरी राकेश सिंह मौका-कांग्रेस की सूची में भिंड विधानसभा क्षेत्र से चौधरी राकेश सिंह को मौका दिया है। यहां से भाजपा ने अभी नाम घोषित नहीं किया है। गोहद सीट से केशव देशाई को मौका दिया गया है।

दतिया में चिरप्रतिद्वंदी एक बार फिर आमने- सामनेअंचल में दतिया से और पिछोर से कांग्रेस ने टिकट बदले हैं। दतिया में गृहमंत्री डा. नरोत्तम मिश्रा

ग्वालियर पूर्व से माया सिंह, दक्षिण से नारायन कुशवाह होंगे भाजपा के उम्मीदवार

ग्वालियर. । भाजपा ने विधानसभा चुनाव के लिए अपनी पांचवी सूची जारी कर दी है। इसमें ग्वालियर चंबल अंचल की बची हुई सीटों के उम्मीदवारों के नाम शामिल हैं। इनमें ग्वालियर की दो सीटों, मुरैना की दो सीटों, भिंड की दो सीटों, शिवपुरी की तीनों सीटों, दतिया की एक सीट, श्योपुर की एक सीट के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया है। खासबात यह है कि इन सभी सीटों पर कांग्रेस ने पहले ही अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है।

ग्वालियर पूर्वः ग्वालियर पूर्व विधानसभा से भाजपा ने पूर्व मंत्री माया सिंह को मैदान में उतारा है। उनका सामना कांग्रेस के सतीश सिकरवार से होगा।

ग्वालियर दक्षिणः नारायण कुशवाह को भाजपा ने ग्वालियर दक्षिण विधानसभा से उतारा है। उनके सामने कांग्रेस के वर्तमान विधायक प्रवीण पाठक होंगे।

अंबाह :भाजपा ने अंबाह सुरक्षित सीट से वर्तमान विधायक कमलेश जाटव को मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने यहां से देवेंद्र सखवार को अपना बनाया है।

जौराः जौरा विधानसभा सीट से भाजपा ने वर्तमान विधायक सूबेदार सिंह रजौधा को ही फिर से मैदान में उतारा है। उनका मुकाबला उप चुनाव में उनसे हार पंकज उपाध्याय से ही होगा।

श्योपुरः श्योपुर जिले की विजयपुर विधानसभा सीट से भाजपा ने बाबूलाल मेवरा को मैदान में उतारा है। उनका मुकाबला कांग्रेस के पूर्व मंत्री रामनिवास रावत से होगा।

भिंड शहर। भिंड शहर से भाजपा ने नरेंद्र सिंह कुशवाह को मैदान में उतारा है। यहां उनका मुकाबला कांग्रेस के राकेश चौधरी से होगा।

मेहगांवः मेहगांव से भाजपा ने पूर्व विधायक राकेश शुक्ला को अपना उम्मीदवार बनाया है। उनका मुकाबला कांग्रेस के राहुल सिंह भदौरिया से होगा। शिवपुरी जिला

शिवपरी शहरः भाजपा ने शिवपुरी शहर से देवेंद्र जैन को प्रत्याशी घोषित किया है। शिवपुरी से कांग्रेस ने पूर्व मंत्री केपी सिंह को मैदान में उतारा है। इसके साथ ही कोलारस सीट से महेंद्र यादव को, पोहरी विधान सभा से सुरेश राठखेड़ा को उम्मीदवार बनाया है।

दतिया सेवढ़ाः दतिया की सेवढ़ा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा ने घनश्याम पिरोनिया को उम्मीदवार बनाया है। उनका मुकाबला कांग्रेस के फूलसिंह बरैया से होगा।

श्योपुर विजयपुरः श्योपुर की विजयपुर विधानसभा सीट से भाजपा ने बाबूलाल मेवरा को मैदान में उतारा है। मेवरा पहले भी भाजपा से विधायक रह चुके हैं।

टीकमगढ़ः टीकमगढ़ विधानसभा क्षेत्र से राकेश गिरी को, जतारा से हरिशंकर खटीक, पृथ्वीपुर से शिशुपाल यादव, निवाड़ी से अनिल जैन, चांदला से दिलीप अहिरवार व छतरपुर की बिजावर सीट से राजेश शुक्ला को मैदान में उतारा है।

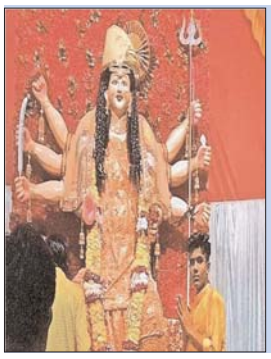

महाष्टमी कल, शहरभर में होंगे हवन-पूजन

ग्वालियर (नप्र)। शहर में नवरात्र के छठे दिन मां की अर्चना विधि विधान के साथ की गई। ऋषि कात्यायन की पुत्री होने के कारण इनका नाम कात्यायनी पड़ा। नवरात्र का छठा दिन मां शक्ति दुर्गा की छठी शक्ति मां कात्यायनी को समर्पित है। मां की पूजा से विवाह संबंधी बाधाएं दूर होती है। इसलिए अविवाहित युवक-युवतियों ने मां की आराधाना पूरे भक्तिभाव सुखमय दांपत्य जीवन के लिये की, क्योंकि मान्यता है कि इनकी कृपा से योग्य वर की प्राप्ती होती है। यह बृजमंडल की अधिष्ठात्री देवी रूप में प्रतिष्ठित है। गोपियों ने श्रीकृष्ण को पाने के लिये इनकी आराधना की थी। नवरात्र पर श्रद्धालु आधिशक्ति की आराधाना में लीन है। मंदिरों में देवी भक्तों का सैलाब उमड़ रहा है। उल्लास पूर्ण में मनवांछित फल के लिए देवी की पूजा-अर्चना की जा रही है। महाष्टमी की पूजन की तैयारियों शुरु - कल महाष्टमी है। कई परिवारों में नवमी की बजाए अष्टमी का पूजन होता है। महाष्टमी की रात से नगर में विराजित देवी मंडपों में भी हवन-पूजन के साथ भंडारों का सिलसिला शुरु हो जाएगा। नवरात्र पर महाष्टमी का विशेष महत्व होता है। कुछ देवी भक्त अष्टमी को कन्या भोज भी करते हैं। कई स्थानों पर छठवीं का भंडारों के आयोजन किए गए।

जागरण व भजनों से देवी को मनाने का प्रयास कर रहे श्रद्धालु-नईसड़क पर स्थित पहाड़्या वाली माता, जिला कोर्ट के पास स्थित हाइकोर्ट वाली माता पर नवरात्र में महिलाएं भजन कर देवी को मना रही है। भजनों पर नृत्य करने से स्वयं रोक नहीं पाती है।

पीएम मोदी ने कहा आपके सपने और संकल्प दोनों बड़े होने चाहिए, आपका सपना ही मेरा संकल्प

ग्वालियर. सिंधिया स्कूल के फाउंडेशन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आपके सपने और संकल्प दोनों बड़े होने चाहिए, आपका सपना ही मेरा संकल्प है। हमेशा आउट आफ बाक्स सोचिए। अपने आइडिया, सपने नमोएप पर शेयर करिए। उन्होंने कहा कि शार्टकट तात्कालिक लाभ पहुंचता है। लेकिन लांग टर्म की सोच के साथ काम करना होगा। जो भी व्यक्ति तात्कालिक स्वार्थ के लिए काम करता है। उससे समाज व राष्ट्र का नुकसान होता है। 2014 में जब देश ने प्रधानसेवक का दायित्व दिया। हमनें अलग अलग समय सीमा रखकर काम किया है। पिछले 10 सालों में लांगटर्म फैसले लिए। देश को कितने ही पैंडिंग बोझ से दूर किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज आजाद हिंद सरकार का स्थापना दिवस भी है। सभी देशवासियों को इसकी भी बधाई देता हूं। इस गौरवमई इतिहास से जुड़ने का मौका दिया। यह इतिहास सिंधिया स्कूल का भी है और एतिहासिक ग्वालियर शहर का भी है। संगीत सम्राट तानसेन, महादजी सिंधिया, विजयाराजे सिंधिया, अटल बिहारी बाजपेयी, उस्ताद अमजद अली जैसे लोगों का निर्माण ग्वालियर की धरती करती है। यह धरती नारी शक्ति और वीरांगनाओं की तपस्या स्थली है।

ग्वालियर से तीन वजहों से नाता, एक ज्योतिरादित्य गुजरात के दामाद हैं-ग्वालियर आना अपने आप में बहुत सुखद होता है। और दो वजहों से ग्वालियर से नाता है। एक, काशी का सांसद हूं, हमारी संस्कृति संरक्षण में सिंधिया परिवार की भूमिका रही है। काशी में कई घाट बनवाए हैं। आज जिस प्रकार काशी का विकास हो रहा है उसे देखकर महारानी बैजाबाई, महाराज माधवराज को प्रशन्नता होती होगी। ग्वालियर से दूसरा कनेक्शन ज्योतिरादित्य गुजरात के दामाद हैं। इस नाते भी ग्वालियर से रिश्तेदारी है। मेरा गांव गायकवाड़ स्टेट का गांव है। मेरे गांव में प्राथमिक स्कूल गायकवाड़ परिवार ने बनवाया।

माधवराव प्रथम की सोच भविष्यगामी थी- हमारे यहां कहा गया है कि सज्जन व्यक्ति जैसा मन में सोचते हैं, वैसा कहते भी हैं और करते

भी हैं। यही एक कर्तृत्व परायण व्यक्ति की पहचान होती है। कर्तृत्वनिष्ठ व्यक्ति तात्कालिक लाभ के नहीं, आगामी पीढ़ियों के भविष्य के लिए काम करते हैं। यदि एक शताब्दी का सोच रहे हैं तो शिक्षा से जुड़ी संस्थाएं बनाइए। माधवराव प्रथम ने इस बात को पूरा किया। उनकी यही सोच भी आने वाली पीढ़ियों को उज्जवल बनाने के लिए काम किया। सिंधिया स्कूल उनकी दूरगामी सोच का परिणाम थी। आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण् पर भी ध्यान दिया। उस समय पानी के लिए एक बड़ी व्यवस्था बनाई। हरसी डेम 150 साल बाद भी एसिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। आज भी यह काम आ रहा है।

हमारी सरकार ने पेडिंग काम किए-मोदी ने कहा कि जम्मू कश्मीर से आर्टीकल 370 हटाया । पूर्व फौजियों को वन रैंक वन पेंशन दी। जीएसटी को लागू किया। तीन तलाक के खिलाफ भी कानून हमारी सरकार के दौरान बनाया। कुछ सप्ताह पहले महिलाओं को रिजर्वेशन के अधिनियम को लागू किया। कोशिश यही है कि यंग जनरेशन के लिए देश में एक पाजिटिव माहौल बने। एक ऐसा माहौल जिसमें आपकी जनरेशन के पास अपार्चुनिटी की कमी न हो। ऐसा माहौल हो कि देश का युवा बड़े सपने देखे और प्राप्त करे।

अगले 25 साल में देश को विकसित राष्ट्र बनाएं-मोदी ने कहा कि हमें संकल्प लेना है कि अगले 25 सालों में देश को विकसित बनाकर दिखाएंगे। यह आपको करना है। भारत की यंग जनरेशन को करना है। आपके सामर्थ्य पर विश्वास है। 25 साल आपके लिए जरूरी है, उतने ही भारत के लिए जरूरी हैं। यह सोच कर काम करें कि मैं बनाऊंगा विकसित भारत। मैं नेशन फर्स्ट की सोच की तहत काम करूंगा।

स्पेश स्टेशन स्थापित करने की तैयारी कर रहा है देश-अंतरिक्ष में स्पेश स्टेशन स्थापित करने की तैयारी कर रहा है। ग्वालियर में एयरफोर्स का बड़ा बेस स्टेशन है। आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। भारत का बढ़ता हुआ सामर्थ्य आपके लिए पासीबिलिटी बना रहा हे। 2014 से पहले महज 100 स्टार्टअप हुआ करते थे। आज 1 लाख के करीब पहुंच रहा है। सिंधिया स्कूल के बच्चों को यूनीकोन बनाने हैं। सरकार के तौर हमने नए सेक्टर ओपन किए हैं। पहले सेटेलाइट सरकार बनाती है। लेकिन अब स्पेश स्पेश सेक्टर को ओपन कर दिए। डिफेंस सेक्टर को भी आप के लिए ओपन कर दिए। कई सेक्टर आपके लिए बन रहे हैं।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478